।।श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः।।

कार्तिक - माहात्म्य

एवं

श्रीदामोदर - भजन

•

- संकलनकर्ता -

श्रीरूपगोस्वामी के अनुगत एवं उनके प्रियजन,
विष्णुपादपद्मस्वरूप, नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
108 श्रीश्रीमद्भक्तिदयित माधव गोस्वामी महाराज
के अनुगृहीत

अनिरुद्ध दास अधिकारी

प्रकाशक
श्री अनिरुद्ध दास अधिकारी
●
सम्पादक
श्री हरिपददास अधिकारी
●
आभार-
मुखपृष्ठ व अन्य अनेक चित्र इण्टरनेट एवं उदार वैष्णव भक्तों के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं। सभी का आभार एवं साधुवाद।
●
द्वितीय संस्करण-3000 प्रतियाँ
शरद पूर्णिमा, 08 अक्टूबर 2014
●
मुद्रण-संयोजन-
श्री हरिनाम प्रेस, हरिनाम पथ, लोई बाजार,
वृन्दावन-281121 • मोबाइल : 07500-987654

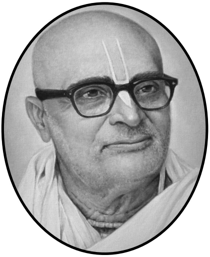

समर्पण

•

परमकरुणामय एवं अहैतुक कृपालु
अस्मदीय श्रीगुरुदेव,
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद 108
श्रीश्रीमद्भक्तिदयित माधव गोस्वामी जी महाराज
की प्रेरणा से ही
यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है।
श्रीगुरुपादपद्म की अपनी ही वस्तु,
उन्हीं के करकमलों में,
सादर भाव पूर्वक समर्पित है।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण
कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम
राम राम हरे हरे

विषय-सूची

1. कार्तिक व्रत की महिमा 08
2. जय ध्वनि 13
3. दैनिक वन्दना 16
4. श्रीगुरु-परम्परा 20
5. श्रीगुरुदेवाष्टकम् 23
6. श्रीवैष्णव-वन्दना 26

कार्तिक व्रत में श्रीराधाकृष्ण का अष्टकालीय लीला-कीर्तन

7. प्रथम याम कीर्तन 28
8. श्रीदामोदराष्टकम् 35
9. श्रीनृसिंहदेव जी की स्तुति 41
10. श्रीगजेन्द्रमोक्ष 43
11. द्वितीय याम कीर्तन 62
12. तृतीय याम कीर्तन 66
13. चतुर्थ याम कीर्तन 70

15. जय राधे जय कृष्ण जय वृन्दावन 74
16. हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः 76
17. पंचम याम कीर्तन 80
18. राधे जय जय माधव दयिते 85
19. देव भवन्तं वन्दे 87
20. षष्ठ याम कीर्तन 90
21. सप्तम याम कीर्तन 94
22. अष्टम याम कीर्तन 99
23. श्री कृष्ण चैतन्य प्रभु दया कर मोरे 102
24. जय दाओ, जय दाओ 105
25. श्रीराधाकृपाकटाक्ष स्तोत्र 109
26. श्रीकृष्णकृपाकटाक्ष स्तोत्र 123
27. दो मिनट में भगवान् का दर्शन 130
28. वृन्दा महारानी की प्रसन्नता से भगवद्प्राप्ति 133
29. श्री तुलसी जी की आरती 137
30. श्री अनिरुद्ध प्रभु जी का परिचय 139
30. श्री अनिरुद्ध प्रभु जी द्वारा लिखे गये ग्रन्थ 144

श्रीयशोदा मैया और कन्हैया

कार्तिक व्रत या दामोदर व्रत की महिमा

सनातन धर्म में कार्तिक व्रत की विशेष महिमा बताई गयी है। कार्तिक व्रत को वैष्णव भाषा में दामोदर व्रत भी कहते हैं। जो मनुष्य कभी भी यज्ञ अनुष्ठान नहीं करता, कार्तिक व्रत करने से वह व्यक्ति भी यज्ञफल अर्थात् विष्णु भक्ति को प्राप्त कर लेता है। इस मास में श्रीहरि के मन्दिर में कर्पूर व अन्य सुगन्धित सामग्री के साथ दीप जलाने से जगत् में फिर दोबारा जन्म ग्रहण नहीं करना पड़ता। सूर्य ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र में दान करने से एवं चन्द्र ग्रहण के समय नर्मदा नदी में स्नान करने से जो पुण्य फल प्राप्त होता है, कार्तिक मास में केवल दीप दान करने से उससे करोड़ों गुना ज्यादा पुण्य फल प्राप्त होता है। पद्मपुराण में वर्णित है कि जो व्यक्ति श्रीकृष्ण के सामने अखण्ड (पूरी रात्रि) दीप जलाता है उसे विष्णु लोक प्राप्त होता है।

जो मनुष्य कार्तिक मास में ऊँचे स्थान पर आकाश दीपदान करता है वह अपने समस्त कुल का उद्धार करता है एवं उसे विष्णुलोक की प्राप्ति होती है। कार्तिक मास में भगवान् श्रीकृष्ण के मन्दिर की परिक्रमा करने से, प्रत्येक कदम पर अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है। इस महीने में भगवान् श्रीकृष्ण के सामने भक्तिपूर्वक नृत्य एवं संकीर्तन करने से अक्षय (जिसका कभी विनाश नहीं होता) फल की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति कार्तिक मास में महाभारत ग्रन्थ से विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र एवं श्रीमद्भागवत महापुराण से गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करता है, उसको दोबारा जन्म ग्रहण नहीं करना पड़ता। जो व्यक्ति कार्तिक मास में भक्ति सहित कार्तिक मास के नियमों का पालन करता है व हरि कथा श्रवण-कीर्तन करता है, वह करोड़ों जन्मों की दुर्गति से छुटकारा पाकर अपने कई कुलों का उद्धार कर लेता है। कार्तिक मास में अति यत्नपूर्वक प्रतिदिन श्रीमद्भागवत के श्लोक का श्रद्धापूर्वक पाठ करने से, 18 पुराणों के पाठ

का फल प्राप्त होता है। कार्तिक मास में वैष्णवों (भगवान् विष्णु के भक्त) की सेवा करने से राजसूय एवं अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

कार्तिक मास में भूमि पर शयन, ब्रह्मचर्य पालन, रात्रि जागरण, प्रातः स्नान, तुलसी सेवा, दीप दान, हरि कथा श्रवण व कीर्तन और–

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

इस महामन्त्र का नियमित रूप से जप करने से अन्य दिनों की अपेक्षा करोड़ों गुणा ज्यादा फल प्राप्त होता है और दुर्लभ श्रीकृष्ण भक्ति प्राप्त होती है।

श्रीमद्भागवत पुराण आदि दिव्य ग्रन्थों के अनुसार जन्म–मृत्यु से परे, परब्रह्म, अनन्त गुण सम्पन्न सनातन पुरुष भगवान् श्रीकृष्ण जब अपनी बाल लीला में माता

यशोदा जी के द्वारा ओखली से बाँधे गये तो भगवान् ने अपनी दाम बन्धन लीला के माध्यम से बताया कि मैं सीमा में होने पर भी असीम हूँ। मुझे कोई अपनी शक्ति से नहीं बाँध सकता। एक मात्र भक्ति के द्वारा ही मुझ दामोदर को प्राप्त किया जा सकता है और वह भक्ति प्राप्त होती है– भगवान् के शुद्ध भक्तों का संग करने से।

जो इस व्रत का नियम से पालन करते हैं उन्हें अन्य कोई यज्ञ, तपस्या एवं अन्यान्य तीर्थों की सेवा करने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए श्रीकृष्ण भक्ति पिपासु सज्जनों से हमारा निवेदन है कि वे साधु भक्तों के आनुगत्य में नियमपूर्वक साधु–संग, नाम–संकीर्तन, श्रीमद्भागवत श्रवण, श्रीधाम वास (श्रीमठ–मन्दिर में वास) एवं श्रद्धा से श्रीमूर्ति सेवन रूपी पाँच मुख्य भक्ति अंगों का अनुशीलन करते हुए इस स्वर्ण अवसर का लाभ उठायें एवं अपने जीवन को धन्य करें।

हमारे पूर्वाचार्य श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी जी तथा श्रील भक्ति विनोद ठाकुर जी ने कार्तिक व्रत के माध्यम से अपने अनुगत जनों को संक्षिप्त में ये बताया कि गोलोक धाम वृन्दावन में नित्यप्रति क्या–क्या लीलाएँ होती हैं व भक्त उनका रसास्वादन कैसे करते हैं तथा सांसारिक बद्ध जीव उन लीलाओं में सेवा करने का अधिकार कैसे प्राप्त कर सकता है ? अतः कार्तिक व्रत में गौड़ीय भक्तों के आनुगत्य में अष्टयाम कीर्तन व दामोदर अष्टक अवश्य गाना चाहिए।

वैष्णवदासानुदास

बी. एस. निष्किंचन

जय-ध्वनि

जय श्रीश्रीगुरु-गौरांग-गान्धर्विका-
गिरिधारी जी की जय

जय पतितपावन परम करुणामय
ॐ विष्णुपाद 108 श्रीश्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ गोस्वामी
महाराज जी की जय

जय नित्यलीला प्रविष्ट
ॐ विष्णुपाद परमहंस 108 श्री श्रील भक्तिदयित माधव
गोस्वामी महाराज जी की जय

जय नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णपाद परमहंस
108 श्री श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी
ठाकुर प्रभुपाद जी की जय

जय नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद परमहंस 108
श्री श्रील गौरकिशोरदास बाबा जी महाराज की जय

जय नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद 108
श्री श्रील सच्चिदानन्द भक्ति विनोद ठाकुर जी की जय

जय नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद वैष्णव सार्वभौम
श्रील जगन्नाथदास बाबाजी महाराज जी की जय

जय श्री श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभु की जय

जय श्री श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर की जय

जय श्री श्रील नरोत्तम ठाकुर की जय

जय श्री श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी जी की जय

जय श्रीरूप–सनातन–भट्ट रघुनाथ–श्रीजीव–
गोपालभट्ट–दास रघुनाथ–षड्गोस्वामी की जय

जय स्वरूप दामोदर गोस्वामी की जय

जय श्रीकृष्णचैतन्य–प्रभु नित्यानन्द–श्रीअद्वैत–
गदाधर–श्रीवासादि गौर भक्तवृन्द की जय

जय श्री राधा मदनमोहन जी की जय

जय श्रीराधा–गोविन्द देव जी की जय

जय श्रीराधा–गोपीनाथ जी की जय

जय–अन्तर्द्वीप–श्रीधाम–मायापुर–सीमन्तद्वीप–गोद्रुमद्वीप–मध्यद्वीप–कोलद्वीप–ऋतुद्वीप–जह्नुद्वीप–मोदद्रुमद्वीप–रुद्रद्वीपात्मक श्रीनवद्वीपधाम की जय

जय द्वादशवन–यमुना–मथुरा–वृन्दावन–गोवर्धन–राधाकुण्ड श्यामकुण्डात्मक श्रीब्रजमण्डल की जय

जय श्रीविश्व वैष्णव राजसभा की जय

जय आकर मठराज श्रीचैतन्य मठ की जय

जय श्रीगौड़ीय मठ और अन्यान्य शाखा मठ–समूह की जय

जय श्रीधाम मायापुर ईशोद्यान स्थित मूल श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ और तत्शाखा मठ–समूह की जय

श्रीहरिनाम संकीर्तन की जय

गौर प्रेमानन्दे हरि हरि बोल।

दैनिक वन्दना

सपरिकर–श्रीहरि–गुरु–वैष्णव वन्दना

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपदकमलं श्रीगुरून् वैष्णवांश्च,
श्रीरूपं साग्रजातं सहगण–रघुनाथान्वितं तं सजीवम्।
साद्वैतं सावधूतं परिजनसहितं कृष्णचैतन्यदेवं,
श्रीराधाकृष्णपादान् सहगण–ललिता श्रीविशाखान्वितांश्च।।1

श्रीगुरुदेव–प्रणाम

ॐ अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।2।।

श्रील माधव गोस्वामी महाराज–प्रणाम

नम ॐ विष्णुपादाय रूपानुग प्रियाय च।
श्रीमते भक्तिदयितमाधवस्वामी–नामिने।।
कृष्णाभिन्न–प्रकाश–श्रीमूर्त्तये दीनतारिणे।
क्षमागुणावताराय गुरवे प्रभवे नमः।।

सतीर्थप्रीतिसद्धर्म–गुरुप्रीति–प्रदर्शिने।
ईशोद्यान–प्रभावस्य प्रकाशकाय ते नमः।।
श्रीक्षेत्रे प्रभुपादस्य स्थानोद्धार–सुकीर्तये।
सारस्वत गणानन्द–सम्वर्धनाय ते नमः।।3।।

श्रील प्रभुपाद–प्रणाम

नम ॐ विष्णुपादाय कृष्णप्रेष्ठाय भूतले।
श्रीमते भक्तिसिद्धान्त–सरस्वतीति नामिने।।
श्रीवार्षभानवी देवी दयिताय कृपाब्धये।
कृष्णसम्बन्धविज्ञानदायिने प्रभवे नमः।।
माधुर्योज्ज्वलप्रेमाढ्य–श्रीरूपानुगभक्तिद।
श्रीगौरकरुणाशक्तिविग्रहाय नमोऽस्तुते।।
नमस्ते गौरवाणी श्रीमूर्त्तये दीनतारिणे।
रूपानुगविरुद्धापसिद्धान्त–ध्वान्तहारिणे।।4।।

श्रील गौरकिशोर–प्रणाम

नमो गौरकिशोराय साक्षाद्वैराग्यमूर्त्तये।
विप्रलम्भरसाम्भोधे ! पादाम्बुजाय ते नमः।।5।।

श्रील भक्तिविनोद–प्रणाम

नमो भक्तिविनोदाय सच्चिदानन्द–नामिने।
गौरशक्ति स्वरूपाय रूपानुगवराय ते।।6।।

श्रील जगन्नाथदास बाबाजी–प्रणाम

गौराविर्भावभूमेस्त्वं निर्देष्टा सज्जनप्रियः।
वैष्णवसार्वभौम – श्रीजगन्नाथाय ते नमः।।7।।

श्रीवैष्णव प्रणाम

वाञ्छाकल्पतरुभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः।।8।।

श्रीगौरांगमहाप्रभु–प्रणाम

नमो महावदान्याय कृष्णप्रेमप्रदाय ते।
कृष्णाय कृष्णचैतन्यनाम्ने गौरत्विषे नमः।।9।।

श्रीराधा–प्रणाम

तप्तकाञ्चनगौरांगि! राधे! वृन्दावनेश्वरि!
वृषभानुसुते! देवि! प्रणमामि हरिप्रिये!।।10।।

श्रीकृष्ण–प्रणाम

हे कृष्ण! करुणासिन्धो! दीनबन्धो! जगत्पते!।
गोपेश! गोपिकाकान्त! राधाकान्त! नमोऽस्तुते।।11।।

श्रीसम्बन्धाधिदेव प्रणामः

जयतां सुरतौ पंगोर्मम मन्दमतेर्गति।
मत्सर्वस्वपदाम्भोजौ राधामदनमोहनौ।।12।।

श्रीअभिधेयाधिदेव–प्रणाम

दीव्यद्वृन्दारण्यकल्पद्रुमाधः
श्रीमद्रत्नागारसिंहासनस्थौ।
श्रीश्रीराधा–श्रीलगोविन्ददेवौ,
प्रेष्ठालीभिः सेव्यमानौ स्मरामि।।13।।

श्रीप्रयोजनाधिदेव–प्रणाम

श्रीमान् रासरसारम्भी वंशीवटतटस्थितः।
कर्षण् वेणुस्वनैर्गोपीर्गोपीनाथः श्रियेऽस्तु नः।।14।।

श्रीतुलसी प्रणाम

वृन्दायै तुलसीदेव्यै प्रियायै केशवस्य च।
विष्णुभक्तिप्रदे देवि ! सत्यवत्यै नमो नमः।।15।।

श्रीगुरु-परम्परा

कृष्ण हैते चतुर्मुख, हय कृष्ण-सेवोन्मुख,
ब्रह्मा हैते नारदेर मति।
नारद हइते व्यास, मध्व कहे व्यासदास,
पूर्णप्रज्ञ पद्मनाभ-गति।।
नृहरि माधव-वंशे, अक्षोभ्य परमहंसे,
शिष्य बलि' अंगीकार करे।
अक्षोभ्येर शिष्य जय-तीर्थ नामे परिचय,
ताँर दास्ये ज्ञानसिन्धु तरे।।
ताँहा हैते दयानिधि, ताँर दास विद्यानिधि,
राजेन्द्र हइल ताँहा हइते।
ताँहार किंकर जय- धर्म नामे परिचय,
परम्परा जान भालमते।।

जयधर्म–दास्ये ख्याति, श्रीपुरुषोत्तम यति,
ताँ हइते ब्रह्मण्यतीर्थ सूरि।
व्यासतीर्थ ताँर दास, लक्ष्मीपति व्यासदास,
ताँहा हइते माधवेन्द्रपुरी।।
माधवेन्द्रपुरीवर, शिष्यवर श्रीईश्वर,
नित्यानन्द, श्रीअद्वैत विभु।
ईश्वरपुरीके धन्य, करिलेन श्रीचैतन्य,
जगद्‌गुरु गौरमहाप्रभु।।
महाप्रभु श्रीचैतन्य, राधा–कृष्ण नहे अन्य,
रूपानुग जनेर जीवन।
विश्वम्भर प्रियंकर, श्रीस्वरूप दामोदर,
श्रीगोस्वामी रूप–सनातन।।
रूपप्रिय महाजन, जीव–रघुनाथ हन,
ताँर प्रिय कवि कृष्णदास।
कृष्णदास प्रियवर, नरोत्तम सेवापर,
याँर पद विश्वनाथ आश।।

विश्वनाथ भक्तसाथ, बलदेव जगन्नाथ,
ताँर प्रिय श्रीभक्तिविनोद।
महाभागवतवर, श्री गौरकिशोर वर,
हरिभजनेते याँर मोद।।
श्रीवार्षभानवीवरा, सदा सेव्य-सेवापरा,
ताँहार दयितदास नाम।
ताँहार परम प्रेष्ठ, रूपानुग जन श्रेष्ठ,
माधव गोस्वामी गुणधाम।।
श्रीभक्तिदयित ख्याति, सतीर्थ सज्जने प्रीति,
दीन हीन अगतिर गति।
एइ सब हरिजन, गौरांगेर निज जन,
ताँदेर उच्छिष्टे मोर मति।।

श्रीगुरुदेवाष्टकम्

संसारदावानललीढलोक –

त्राणाय कारुण्यघनाघनत्वम् ।

प्राप्तस्य कल्याणगुणार्णवस्य,

वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् । ।1 । ।

महाप्रभोः कीर्तन नृत्यगीत–

वादित्रमाद्यन्मनसो रसेन ।

रोमाञ्चकम्पाश्रुतरंगभाजो,

वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् । ।2 । ।

श्रीविग्रहाराधननित्यनाना,

शृंगारतन्मन्दिरमार्ज्जनादौ ।

युक्तस्य भक्तांश्च नियुन्जतोऽपि,

वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् । ।3 । ।

चतुर्विध श्रीभगवत्प्रसाद –
स्वाद्वन्नतृप्तान् हरिभक्तसंघान।
कृत्वैव तृप्तिं भजतः सदैव,
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।4।।

श्रीराधिकामाधवयोरपार –
माधुर्यलीलागुणरूपनाम्नाम्।
प्रतिक्षणास्वादनलोलुपस्य,
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।5।।

निकुञ्जयूनो रतिकेलिसिद्ध्यै,
या यालिभिर्युक्तिरपेक्षणीया।
तत्रातिदाक्ष्यादतिवल्लभस्य,
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।6।।

साक्षाद्धरित्वेन समस्तशास्त्रै-
रुक्तस्तथा भाव्यत एव सद्भिः।
किन्तु प्रभोर्यः प्रिय एव तस्य,
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।7।।

यस्य प्रसादाद् भगवत्प्रसादो,
यस्याप्रसादान्न गतिः कुतोऽपि।
ध्यायंस्तुवंस्तस्य यशस्त्रिसन्ध्यं,
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।8।।

श्रीमद्गुरोरष्टकमेतदुच्चै-
र्ब्राह्मे मुहूर्त्ते पठति प्रयत्नात्।
यस्तेन वृन्दावननाथसाक्षात्,
सेवैव लभ्या जनुषोऽन्त एव।।9।।

श्रीवैष्णव वन्दना

वृन्दावनवासी यत वैष्णवेर गण।
प्रथमे वन्दना करि सबार चरण।।1।।
नीलाचलवासी यत महाप्रभुर गण।
भूमिते पड़िया वन्दों सभार चरण।।2।।
नवद्वीपवासी यत महाप्रभुर भक्त।
सभार चरण वन्दों हैया अनुरक्त।।3।।
महाप्रभुर भक्त यत गौड़ देशे स्थिति।
सभार चरण वन्दों करिया प्रणति।।4।।
ये–देशे ये–देशे वैसे गौरांगेर गण।
ऊर्ध्वबाहु करि' वन्दों सबार चरण।।5।।
हइयाछेन हइबेन प्रभुर यत दास।
सभार चरण वन्दों दन्ते करि घास।।6।।

ब्रह्माण्ड तारिते शक्ति धरे जने–जने।
ए वेद–पुराणे गुण गाय येबा शुने।।7।।
महाप्रभुर गण सब पतितपावन।
ताइ लोभे मुई पापी लइनु शरण।।8।।
वन्दना करिते मुञि कत शक्ति धरि।
तमो–बुद्धि दोषे मुञि दम्भ मात्र करि।।9।।
तथापि मूकेर भाग्य मनेर उल्लास।
दोष क्षमि मो–अधमे कर निज दास।।10।।
सर्ववाञ्छासिद्धि हय, यमबन्ध छुटे।
जगते दुर्लभ हैया प्रेमधन लुटे।।11।।
मनेर वासना पूर्ण अचिराते हय।
देवकीनन्दन दास एइ लोभे कय।।12।।

कार्तिक व्रते श्रीराधाकृष्णयोरष्टकालीय

लीला-कीर्तनम्

प्रथम-याम-कीर्तन

(निशान्तलीला : भजन-श्रद्धा)

(6 दण्ड=2.24 मिनट : 3.22 से 5.46 मिनट तक)

चेतोदर्पणमार्जनं भवमहादावाग्निनिर्वापणं,
श्रेयः कैरवचन्द्रिकावितरणं विद्यावधूजीवनम्।
आनन्दाम्बुधिवर्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनं,
सर्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्णसंकीर्तनम्।।1।।

नाम-माहात्म्य के विषय में, कलियुगपावनावतारी भगवान् श्रीचैतन्यमहाप्रभु की उक्ति तो सर्वोत्कृष्ट है, यथा-

इस मायामय जगत् में श्रीकृष्ण संकीर्तन ही विजय को प्राप्त होता है। 1. यही चित्तरूपी-दर्पण का शोधन करने

वाला है, 2. संसारस्वरूप महादावानल को मिटाने वाला है, 3. कल्याणरूपिणी कुमुदिनी के विकास के लिए चन्द्रिका का विस्तार करने वाला है, 4. विद्यारूप–वधू का जीवन स्वरूप है, 5. आनन्दरूपी–समुद्र का बढ़ाने वाला है, 6. पद–पद पर पूर्ण अमृत का आस्वादन कराने वाला है एवं 7. बाहर–भीतर से सर्वतोभावेन अन्तःकरण पर्यन्त स्नान करा देता है, अर्थात् जीव के अन्तःकरण के समस्त पाप–ताप नष्ट कर देता है। इस प्रकार श्रीनामसंकीर्तन की सात भूमिकाएँ हैं। आचाण्डाल पामरपर्यन्त को, इन सात भूमिकाओं पर यथाधिकार पहुँचा देने के कारण कर्म–ज्ञानादि साधनों की अपेक्षा, श्रीनामसंकीर्तन की ही इस जगत् में पूर्ण विजय है। 'परं विजयते'– पद से श्रीचैतन्यमहाप्रभु ने यह भी शिक्षा दी है कि–जैसे ज्ञान, कर्म आदिक साधन, भक्ति की सहायता के बिना दुर्बल रहते हैं, और अपना पूर्ण फल नहीं दे सकते किन्तु भक्तिबीज–श्रीनामसंकीर्तन ऐसा परापेक्षी नहीं है,

अर्थात् यह कर्म, ज्ञान आदि की सहायता की अपेक्षा नहीं करता है। (1)

नाम संकीर्तन हय सर्वानर्थ नाश।
सर्व शुभोदय कृष्णे प्रेमेर उल्लास।।
संकीर्तन हैते–पाप–संसार–नाशन।
चित्तशुद्धि, सर्वभक्तिसाधन–उद्‌गम।।
कृष्णप्रेमोद्‌गम, प्रेमामृत–आस्वादन।
कृष्णप्राप्ति, सेवामृत–समुद्रे मज्जन।।

(चैतन्यचरितामृत अ. 20.13.14)

पीतवरण कलिपावन गोरा।
गाओवइ ऐछन भाव–विभोरा।।1।।
चित्तदर्पण–परिमार्जनकारी।
कृष्णकीर्तन जय चित्तविहारी।।2।।
हेला–भवदाव–निर्वापणवृत्ति।
कृष्णकीर्तन जय क्लेशनिवृत्ति।।3।।

श्रेयः–कुमुदविधु–ज्योत्स्नाप्रकाश।

कृष्णकीर्तन जय भक्ति–विलास।।4।।

विशुद्ध विद्यावधू–जीवनरूप।

कृष्णकीर्तन जय सिद्धस्वरूप।।5।।

आनन्दपयोनिधि–वर्धनकीर्ति।

कृष्णकीर्तन जय प्लावनमूर्ति।।6।।

पदे पदे पीयूष–स्वादप्रदाता।

कृष्णकीर्तन जय प्रेमविधाता।।7।।

भक्तिविनोद–स्वात्मस्नपनविधान।

कृष्णकीर्तन जय प्रेमनिदान।।8।।

रात्र्यन्ते त्रस्तवृन्देरित - बहुविरवैर्बोधितौ कीरशारी–
पद्यैर्हद्यैरहृद्यैरपि सुखशयनादुत्थितौ तौ सखीभिः।
दृष्टौ हृष्टौ तदात्वोदित–रतिललितौ कक्खटीगीः–सशंकौ
राधाकृष्णौ सतृष्णावपि निजनिजधाम्न्याप्ततल्पौ स्मरामि।।1

(श्रीगोविन्दलीलामृत 1/10)

मैं उन श्रीराधा–कृष्ण का स्मरण करता हूँ जो रात्रि के अन्त में व दिवस हो जाने पर राधाकृष्ण की गुप्त–शृंगारमयी लीलाएँ अनधिकारीजनों के द्वारा भी जान ली जायेंगीं इस कारण भयभीत हुई वृन्दादेवी के द्वारा, प्रेरित किये हुए अनेक प्रकार के पक्षियों की मधुरध्वनियों के द्वारा तथा शुकशारिका के द्वारा कर्णप्रिय होने से मनोहर एवं वियोगजनक होने से अप्रियपद्यों के द्वारा जगाये गये हैं एवं सुखमयी शय्या से उठे हुए, जिन दोनों को श्रीललिता आदि अन्तरंग सखियों ने परस्पर हर्षित एवं तत्कालोचित–रति से मनोहर देखा है। उसके बाद जो दोनों, वहीं पर स्थित होकर, फिर भी विलास की तृष्णा से युक्त होकर भी 'कक्खटी'–नामक बानरी की बोली से शंकित होकर, अपने–अपने भवन में शैया पर पहुँच गये।

देखिया अरुणोदय, वृन्दादेवी व्यस्त हय,
कुञ्जे नाना रव कराइल।
शुक-शारी पद्य शुनि, उठे राधा-नीलमणि,
सखीगण देखि हृष्ट हैल।।
कालोचित सुललित, कक्खटिर रवे भीत,
राधाकृष्ण सतृष्ण हइया।
निज निज गृहे गेला, निभृते शयन कैला,
दुँहे भजि से लीला स्मरिया।।
एइ लीला स्मर आर, गाओ कृष्ण नाम।
कृष्णलीला प्रेमधन पाबे कृष्णधाम।।

श्रीकृष्ण की ऊखल बन्धन लीला

श्रीपद्मपुराणान्तर्गत रुक्मांगद–मोहिनी संवाद में श्रीसत्यव्रत मुनि कथित

श्रीदामोदराष्टकम्

नमामीश्वरं सच्चिदानन्द रूपं,
लसत्कुण्डलं गोकुले भ्राजमानं।
यशोदाभियोलूखलाद्धावमानं,
परामृष्टमत्यन्ततो द्रुत्य गोप्या।।1।।

रुदन्तं मुहुर्नेत्रयुग्मं मृजन्तं,
करांभोजयुग्मेन सातंकनेत्रम्।
मुहुःश्वासकम्प–त्रिरेखांककण्ठ,
स्थितग्रैवदामोदरं भक्तिबद्धम्।।2।।

इतीदृक् स्वलीलाभिरानन्दकुण्डे,
स्वघोषं निमज्जन्तमाख्यापयन्तम्।
तदीयेशितज्ञेषु भक्तैर्जितत्वं,
पुनः प्रेमतस्तं शतावृत्ति वन्दे।।3।।

वरं देव ! मोक्षं न मोक्षावधिं वा,
न चान्यं वृणेऽहं वरेशादपीह।
इदं ते वपुर्नाथ ! गोपालबालं,
सदा मे मनस्याविरास्तां किमन्यैः ?।।4।।

इदं ते मुखाम्भोजमत्यन्तनीलै–
–र्वृतं कुन्तलैः स्निग्धवक्रैश्च गोप्या।
मुहुश्चुम्बितं बिम्बरक्ताधरं मे,
मनस्याविरास्तामलं लक्षलाभैः।।5।।

नमो देव दामोदरानन्त विष्णो !
प्रसीद प्रभो ! दुखजालाब्धिमग्नम्।
कृपादृष्टिवृष्ट्यातिदीनं वतानु
गृहाणेश ! मामज्ञमेध्यक्षिदृश्यः।।6।।

कुबेरात्मजौ बद्धमूर्त्यैव यद्वत्,
त्वया मोचितौ भक्तिभाजौ कृतौ च।
तथा प्रेमभक्तिं स्वकां मे प्रयच्छ,
न मोक्षे ग्रहो मेऽस्ति दामोदरेह।।7।।

नमस्तेऽस्तु दाम्ने स्फुरद्दीप्तिधाम्ने,
त्वदीयोदरायाथ विश्वस्यधाम्ने।
नमो राधिकायै त्वदीयप्रियायै,
नमोऽनन्तलीलाय देवाय तुभ्यम्।।8।।

मैं उन परमेश्वर (सर्वशक्तिमान) सत्–चित्–आनन्द–स्वरूप भगवान् श्रीदामोदर को नमस्कार करता हूँ, जो गोकुल में सुशोभित हो रहे हैं एवं जिनके कानों में कुण्डल चमक रहे हैं। (अपने ही घर में माता श्रीयशोदा जी के दधिभाण्ड फोड़–कर दधि–माखन चुराने एवं बन्दरों को लुटाने के कारण) श्रीयशोदा द्वारा ऊखल से बाँधे जाने के भय से जो भाग निकले और श्रीयशोदा ने भी पीछे तेजी से भागकर, जिन्हें पकड़ लिया है।।1।।

जो भयभीत होकर रोते हुये अपने दोनों करकमलों से नेत्रों को बारम्बार पोंछ रहे हैं और लम्बे–लम्बे श्वांसों को भरते हुए काँप रहे हैं, जिनके त्रिरेखायुक्त कण्ठ में सुमाल

सुशोभित हो रही है, भक्ति से बँध जाने वाले उन्हीं भगवान् श्रीदामोदर की मैं वन्दना करता हूँ।।2।।

मैं उन्हीं भगवान् दामोदर को फिर प्रेमपूर्वक सौ बार प्रणाम करता हूँ, जो इस प्रकार की अपनी बाल-लीलाओं से अपने ब्रज प्रदेश को आनन्द-सरोवर में डुबकियाँ दिला रहे हैं, तथा अपने ऐश्वर्य-ज्ञानियों को (ऐश्वर्य के उपासकों को) भक्ति द्वारा अपनी पराजय या भक्ति-वश्यता दिखला रहे हैं।।3।।

हे वरप्रदाताओं में श्रेष्ठ ! मैं मोक्ष अथवा मोक्ष के पराकाष्ठा स्वरूप वैकुण्ठ को नहीं चाहता हूँ न ही किसी दूसरी वरणीय वस्तु का वरदान। हे नाथ ! मेरे हृदय में तो आपका यह श्रीबाल-गोपाल विग्रह सदा स्फुरित होता रहे। मुझे और किसी वरदान से क्या प्रयोजन ?।।4।।

हे प्रभो ! अतिशय काले, स्निग्ध एवं घुँघराले केशों से आवृत्त हुआ, आपका यह श्रीमुखारविन्द, जो बिम्ब-फल

के समान लाल-लाल अधरों से युक्त है एवं जिसे बारम्बार माता यशोदा चूम रही हैं, सदा मेरे हृदय में विराजमान रहे। मुझे दूसरे-दूसरे लाखों लाभों से कोई प्रयोजन नहीं है।।5।।

हे देव ! हे दामोदर ! हे अनन्त ! हे सर्वव्यापक ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे प्रभो ! आप मुझ पर प्रसन्न हों, मैं दुःखसमूह-रूप समुद्र में डूब रहा हूँ। हे भगवन् ! अपनी कृपा-दृष्टि-वृष्टि से मुझ अति दीन, मतिहीन को अनुगृहीत कीजिये एवं मुझे साक्षात् दर्शन दीजिये।।6।।

हे दामोदर ! आपने ऊखल से बँधे रहते हुए ही जैसे नलकूबर तथा मणिग्रीव नाम कुबेर-पुत्रों को शाप-बन्धन से विमुक्त कर दिया और अपनी भक्ति का पात्र बना लिया, उसी प्रकार मुझे भी अपनी प्रेम-भक्ति ही प्रदान कीजिये, मेरा मुक्ति के लिये कुछ भी आग्रह नहीं है।।7।।

हे देव ! उज्ज्वल कान्ति की आश्रयस्वरूप उस रज्जु को मेरा नमस्कार है एवं समस्त विश्व के आधार स्वरूप आपके उदर को भी नमस्कार है। आपकी परम प्रिया श्रीराधिका जी को मैं प्रणाम करता हूँ एवं अनन्त–लीलाधारी आपके लिए भी मेरा प्रणाम है।।8।।

(अनुवाद : ब्रजविभूति श्रीश्यामदास जी)

●

कार्तिक मास को दामोदर मास भी कहा जाता है। कार्तिक–मास में जो साधक नियम से प्रतिदिन इस दामोदराष्टक का ध्यान–पूर्वक पाठ करता है, श्रीयशोदा से डरे हुए उन श्रीबालकृष्ण प्रभु से साधक के समस्त कर्मबन्धन डर जाते हैं।

श्रीनृसिंहदेव जी की स्तुति

इतो नृसिंहः ! परतो नृसिंहो !

यतो यतो यामि ततो नृसिंहः।

बहिर्नृसिंहो ! हृदये नृसिंहो !

नृसिंहमादिं शरणं प्रपद्ये।।1।।

नमस्ते नरसिंहाय प्रह्लादाह्लाददायिने।

हिरण्यकशिपोर्वक्षः शिलाटंकनखालये।।2।।

वागीशा यस्य वदने लक्ष्मीर्यस्य च वक्षसि।

यस्यास्ते हृदये संवित् तं नृसिंहमहं भजे।।3।।

श्रीनृसिंह जय नृसिंह जय जय नृसिंह।

प्रह्लादेश ! जय पद्मामुखपद्म–भृंग।।4।।

●

श्रीगजेन्द्र मोक्ष लीला

गजेन्द्र मोक्ष

(श्रीमद्भागवत 8.3.1–33)

श्रीमद्भागवत के अष्टम स्कन्ध में गजेन्द्रमोक्ष की कथा है। द्वितीय अध्याय में ग्राह के साथ गजेन्द्र के युद्ध का वर्णन है, तृतीय अध्याय में गजेन्द्रकृत भगवान् के स्तवन और गजेन्द्रमोक्ष का प्रसंग है।

श्रीशुक उवाच

एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनो हृदि।
जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम्।।1।।

गजेन्द्र उवाच

ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम्।
पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि।।2।।
यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम्।
योऽस्मात्परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम्।।3।।

यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं,
क्वचिद्विभातं क्व च तत्तिरोहितम्।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते,
स आत्ममूलोऽवतु मां परात्परः।।4।।
कालेन पञ्चत्वमितेषु कृत्स्नशो,
लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु।
तमस्तदाऽऽसीद् गहनं गभीरं,
यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः।।5।।
न यस्य देवा ऋषयः पदं विदुर्जन्तुः
पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम्।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो-
दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु।।6।।
दिदृक्षवो यस्य पदं सुमङ्गलं-
विमुक्तसङ्गा मुनयः सुसाधवः।
चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने
भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः।।7।।

न विद्यते यस्य च जन्म कर्म
वा न नामरूपे गुणदोष एव वा।
तथापि लोकाप्ययसम्भवाय यः
स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति।।8।।
तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये।
अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे।।9।।
नमः आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने।
नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि।।10।।
सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता।
नमः कैवल्यनाथाय निर्वाणसुखसंविदे।।11।।
नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे।
निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च।।12।।
क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे।
पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः।।13।।
सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे।
असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः।।14।।

नमोनमस्तेऽखिलकारणाय
निष्कारणायाद्भुतकारणाय।
सर्वागमाम्नायमहार्णवाय
नमोऽपवर्गाय परायणाय।।15।।
गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय
तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागम–
स्वयंप्रकाशाय नमस्करोमि।।16।।
मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय
मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीत–
प्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते।।17।।
आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेषु
सक्तैर्दुष्प्रापणाय गुणसङ्गविवर्जिताय।
मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय
ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय।।18।।

यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा
भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति।
किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं
करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम्।।19।।

एकान्तिनो यस्य न कञ्चनार्थं
वाञ्छन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमङ्गलं
गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः।।20।।

तमक्षरं ब्रह्म परं परेशमव्यक्त-
-माध्यात्मिकयोगगम्यम्।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूर-
मनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे।।21।।

यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः।
नाम रूप विभेदेन फल्ग्व्या च कलया कृताः।।22।।

यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो
निर्यान्ति संयान्त्यसकृतस्वरोचिषः।
तथा यतोऽयं गुणसम्प्रवाहो
बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः।।23।।
स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ्
न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः।
नायं गुणः कर्म न सन्न
चासन् निषेधशेषो जयतादशेषः।।24।।
जिजीविषे नाहमिहामुया किमन्त-
-र्बहिश्चावृतयेभयोन्या।
इच्छामि कालेन न यस्य विप्लव-
स्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम्।।25।।
सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम्।
विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम्।।26।।
योगरन्धितकर्माणो हृदि योगविभाविते।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम्।।27।।

नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेग–
शक्तित्रयायाखिलधीगुणाय ।
प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये
कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने ।।28।।

नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहंधिया हतम् ।
तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम् ।।29।।

श्रीशुक उवाच

एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं
ब्रह्मादयो विविधलिङ्गभिदाभिमानाः ।
नैते यदोपससृपुर्निखिलात्मकत्वात्
तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत् ।।30।।

तं तद्वदार्त्तमुपलभ्य जगन्निवासः
स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भिः ।
छन्दोमयेन गरुडेन समुश्मानचक्रायुधो–
ऽभ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः ।।31।।

सोऽन्तस्सरस्युरुबलेन गृहीत आर्तो
दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम्।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रा-
न्नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते।।32।।
तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य
सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार।
ग्राहाद् विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं
सम्पश्यतां हरिरमूमुचदुस्त्रियाणाम्।।33।।

सरल भावार्थ :

श्रीशुकदेवजी कहते हैं- परीक्षित्! अपनी बुद्धि से ऐसा निश्चय करके गजेन्द्र ने अपने मन को हृदय में एकाग्र किया और फिर पूर्वजन्म में सीखे हुए श्रेष्ठ स्तोत्र के जप-द्वारा भगवान् की स्तुति करने लगा।।1।।

गजेन्द्र ने कहा-

जो जगत् के मूल कारण हैं और सबके हृदय में पुरुष के रूप में विराजमान हैं एवं समस्त जगत् के एकमात्र

स्वामी हैं, जिनके कारण इस संसार में चेतनता का विस्तार होता है–उन भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ, प्रेम से उनका ध्यान करता हूँ।।2।। यह संसार उन्हीं में स्थित है, उन्हीं की सत्ता से प्रतीत हो रहा है, वे ही इसमें व्याप्त हो रहे हैं और स्वयं वे ही इसके रूप में प्रकट हो रहे हैं। यह सब होने पर भी वे इस संसार और इसके कारण प्रकृति से सर्वथा परे हैं। उन स्वयंप्रकाश, स्वयंसिद्ध सत्तात्मक भगवान् की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।।3।।

यह विश्व प्रपञ्च उन्हीं की माया से उनमें अध्यस्त है। यह कभी प्रतीत होता है, तो कभी नहीं। परन्तु उनकी दृष्टि ज्यों–की–त्यों एक सी रहती है। वे इसके साक्षी हैं और अपने मूल भी वही हैं। कोई दूसरा उनका कारण नहीं है। वे ही समस्त कार्य और कारणों से अतीत प्रभु मेरी रक्षा करें।।4।। प्रलय के समय लोक, लोकपाल और इन सबके कारण सम्पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते हैं। उस समय केवल अत्यन्त घना और गहरा अन्धकार ही अन्धकार रहता है।

परन्तु अनन्त परमात्मा उससे सर्वथा परे विराजमान रहते हैं। वे ही प्रभु मेरी रक्षा करें।।5।। उनकी लीलाओं का रहस्य जानना बहुत ही कठिन है। वे नट की भाँति अनेकों वेष धारण करते हैं। उनके वास्तविक स्वरूप को न तो देवता जानते हैं और न ऋषि ही; फिर दूसरा ऐसा कौन प्राणी है, जो वहाँ तक जा सके और उसका वर्णन कर सके। वे प्रभु मेरी रक्षा करें।।6।।

जिनके परम मंगलमय स्वरूप का दर्शन करने के लिये महात्मागण संसार की समस्त आसक्तियों का परित्याग कर देते हैं और वन में जाकर अखण्डभाव से ब्रह्मचर्य आदि अलौकिक व्रतों का पालन करते हैं तथा अपने आत्मा को सबके हृदय में विराजमान देखकर स्वाभाविक ही सबकी भलाई करते हैं। वे ही मुनियों के सर्वस्व भगवान् मेरे सहायक हैं; वे ही मेरी गति हैं।।7।।

न उनके जन्म-कर्म हैं और न नाम-रूप; फिर उनके सम्बन्ध में गुण और दोष की तो कल्पना ही कैसे की जा

सकती है! फिर भी विश्व की सृष्टि और संहार करने के लिये समय-समय पर वे उन्हें अपनी माया से स्वीकार करते हैं।।8।। उन्हीं अनन्त शक्तिमान् सर्वैश्वर्यमय परब्रह्म परमात्मा को मैं नमस्कार करता हूँ। वे अरूप होने पर भी बहुरूप हैं। उनके कर्म अत्यन्त आश्चर्यमय हैं। मैं उनके चरणों में नमस्कार करता हूँ।।9।।

स्वयंप्रकाश, सबके साक्षी परमात्मा को मैं नमस्कार करता हूँ। जो मन, वाणी और चित्त से अत्यन्त दूर हैं-ऐसे उन परमात्मा को मैं नमस्कार करता हूँ।।10।। विवेकी पुरुष कर्म-संन्यास अथवा कर्म-समर्पण के द्वारा अपना अन्तःकरण शुद्ध करके जिन्हें प्राप्त करते हैं तथा जो स्वयं तो नित्य-मुक्त, परमानन्द एवं ज्ञान स्वरूप हैं ही, दूसरों को कैवल्य मुक्ति देने की सामर्थ्य भी केवल उन्हीं में है- उन प्रभु को मैं नमस्कार करता हूँ।।11।। जो सत्त्व, रज, तम- इन तीन गुणों का धर्म स्वीकार करके क्रमशः शान्त, घोर और मूढ़ अवस्था भी धारण करते हैं, उन

भेदरहित समभाव से स्थित एवं ज्ञानघन प्रभु को मैं बार-बार नमस्कार करता हूँ।।12।।

आप सबके स्वामी, समस्त क्षेत्रों के एकमात्र ज्ञाता एवं सर्वसाक्षी हैं, आपको मैं नमस्कार करता हूँ। आप स्वयं ही अपने कारण हैं। पुरुष और मूल प्रकृति के रूप में भी आप ही हैं। आपको मेरे बार-बार नमस्कार।।13।। आप समस्त इन्द्रिय और उनके विषयों के द्रष्टा हैं, समस्त प्रतीतियों के आधार हैं। अहंकार आदि छायारूप असत् वस्तुओं के द्वारा आपका ही अस्तित्व प्रकट होता है। समस्त वस्तुओं की सत्ता के रूप में भी केवल आप ही भास रहे हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ।।14।। आप सबके मूल कारण हैं, आपका कोई कारण नहीं है। तथा कारण होने पर भी आपमें विकार या परिणाम नहीं होता, इसलिये आप अनोखे कारण हैं। आपको मेरा बार-बार नमस्कार! जैसे समस्त नदी-झरने आदि का परम आश्रय समुद्र है, वैसे ही आप समस्त वेद और शास्त्रों के परम तात्पर्य हैं।

आप मोक्षस्वरूप हैं और समस्त संत आपकी ही शरण ग्रहण करते हैं, अतः आपको मैं नमस्कार करता हूँ।।15।।

जैसे यज्ञ के काष्ठ अरणि में अग्नि गुप्त रहती है, वैसे ही आपने अपने ज्ञान को गुणों की माया से ढक रखा है। गुणों में क्षोभ होने पर उनके द्वारा विविध प्रकार की सृष्टि-रचना का आप संकल्प करते हैं। जो लोग कर्म-संन्यास अथवा कर्म समर्पण के द्वारा आत्मतत्त्व की भावना करके वेद-शास्त्रों से ऊपर उठ जाते हैं, उनके आत्मा के रूप में आप स्वयं ही प्रकाशित हो जाते हैं। आपको मैं नमस्कार करता हूँ।।16।। जैसे कोई दयालु पुरुष फंदे में पड़े हुए पशु का बन्धन काट दे, वैसे ही आप मेरे-जैसे शरणागतों की फाँसी काट देते हैं। आप नित्यमुक्त हैं, परम करुणामय हैं और भक्तों का कल्याण करने में आप कभी आलस्य नहीं करते। आपके चरणों में मेरा नमस्कार है। समस्त प्राणियों के हृदय में अपने अंश के द्वारा अन्तरात्मा के रूप में आप उपलब्ध होते रहते हैं। आप सर्वैश्वर्यपूर्ण

एवं अनन्त हैं। आपको मैं नमस्कार करता हूँ।।17।। जो लोग शरीर, पुत्र, गुरुजन, गृह, सम्पत्ति और स्वजनों में आसक्त हैं–उन्हें आपकी प्राप्ति अत्यन्त कठिन है। क्योंकि आप स्वयं गुणों की आसक्ति से रहित हैं। जीवन्मुक्त पुरुष अपने हृदय में आपका निरन्तर चिन्तन करते रहते हैं। उन सर्वैश्वर्यपूर्ण ज्ञान–स्वरूप भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ।।18।।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की कामना से मनुष्य उन्हीं का भजन करके अपनी अभीष्ट वस्तु प्राप्त कर लेते हैं। इतना ही नहीं, वे उनको सभी प्रकार का सुख देते हैं और अपने ही जैसा अविनाशी पार्षद शरीर भी देते हैं। वे ही परम दयालु प्रभु मेरा उद्धार करें।।19।। जिनके अनन्य प्रेमी भक्तजन उन्हीं की शरण में रहते हुए उनसे किसी भी वस्तु की– यहाँ तक कि मोक्ष की भी अभिलाषा नहीं करते, केवल उनकी परम दिव्य मंगलमयी लीलाओं का गान करते हुए आनन्द के समुद्र में निमग्न रहते हैं।।20।। जो

अविनाशी, सर्वशक्तिमान्, अव्यक्त, इन्द्रियातीत और अत्यन्त सूक्ष्म हैं; जो अत्यन्त निकट रहने पर भी बहुत दूर जान पड़ते हैं; जो आध्यात्मिक योग अर्थात् ज्ञानयोग या भक्तियोग के द्वारा प्राप्त होते हैं- उन्हीं आदि पुरुष, अनन्त एवं परिपूर्ण परब्रह्म परमात्मा की मैं स्तुति करता हूँ।।21।।

जिनकी अत्यन्त छोटी कला से अनेकों नाम-रूप के भेद-भाव से युक्त ब्रह्मा आदि देवता, वेद और चराचर लोकों की सृष्टि हुई है, जैसे धधकती हुई आग से लपटें और प्रकाशमान सूर्य से उनकी किरणें बार-बार निकलती और लीन होती रहती हैं, वैसे ही जिन स्वयंप्रकाश परमात्मा से बुद्धि, मन, इन्द्रिय और शरीर-जो गुणों के प्रवाहरूप हैं- बार-बार प्रकट होते तथा लीन हो जाते हैं, वे भगवान् न देवता हैं और न असुर। वे मनुष्य और पशु-पक्षी भी नहीं हैं। न वे स्त्री हैं, न पुरुष और न नपुंसक। वे कोई साधारण या असाधारण प्राणी भी नहीं हैं। न वे गुण हैं

और न कर्म, न कार्य हैं और न तो कारण ही। सबका निषेध हो जाने पर जो कुछ बचता है, वही उनका स्वरूप है तथा वे ही सब कुछ हैं। वे ही परमात्मा मेरे उद्धार के लिये प्रकट हों।।22-24।।

मैं जीना नहीं चाहता। यह हाथी की योनि बाहर और भीतर-सब ओर से अज्ञानरूप आवरण के द्वारा ढकी हुई है, इसको रखकर करना ही क्या है? मैं तो आत्मप्रकाश को ढकने वाले उस अज्ञानरूप आवरण से छूटना चाहता हूँ, जो कालक्रम से अपने-आप नहीं छूट सकता, जो केवल भगवत्कृपा अथवा तत्त्वज्ञान के द्वारा ही नष्ट होता है।।25।। इसलिये मैं उन परब्रह्म परमात्मा की शरण में हूँ, जो विश्वरहित होने पर भी विश्व के रचयिता और विश्वस्वरूप हैं-साथ ही जो विश्व की अन्तरात्मा के रूप में विश्वरूप सामग्री से क्रीड़ा भी करते रहते हैं, उन अजन्मा परमपद-स्वरूप ब्रह्मको मैं नमस्कार करता हूँ।।26।।

योगीलोग योग के द्वारा कर्म, कर्म-वासना और कर्म-फल को भस्म करके अपने योगशुद्ध हृदय में जिन योगेश्वर भगवान् का साक्षात्कार करते हैं-उन प्रभु को मैं नमस्कार करता हूँ। ।27। ।

प्रभो! आपकी तीन शक्तियों- सत्त्व, रज और तम के रागादि वेग असह्य हैं। समस्त इन्द्रियों और मन के विषयों के रूप में भी आप ही प्रतीत हो रहे हैं। इसलिये जिनकी इन्द्रियाँ वश में नहीं हैं, वे तो आपकी प्राप्ति का मार्ग भी नहीं पा सकते। आपकी शक्ति अनन्त है। आप शरणागत-वत्सल हैं। आपको मैं बार-बार नमस्कार करता हूँ। ।28। ।

आपकी माया अहंबुद्धि से आत्मा का स्वरूप ढक गया है, इसीसे यह जीव अपने स्वरूप को नहीं जान पाता। आपकी महिमा अपार है। उन सर्वशक्तिमान् एवं माधुर्य निधि भगवान् की मैं शरण में हूँ। ।29। ।

श्रीशुकदेव जी कहते हैं–

परीक्षित्! गजेन्द्र ने बिना किसी भेदभाव के निर्विशेषरूप से भगवान् की स्तुति की थी, इसलिये भिन्न–भिन्न नाम और रूप को अपना स्वरूप मानने वाले ब्रह्मा आदि देवता उसकी रक्षा करने के लिये नहीं आये। उस समय सर्वात्मा होने के कारण सर्वदेवस्वरूप स्वयं भगवान् श्रीहरि प्रकट हो गये।।30।। विश्व के एकमात्र आधार भगवान् ने देखा कि गजेन्द्र अत्यन्त पीड़ित हो रहा है। अतः उसकी स्तुति सुनकर वेदमय गरुड़पर सवार हो चक्रधारी भगवान् बड़ी शीघ्रता से वहाँ के लिये चल पड़े, जहाँ गजेन्द्र अत्यन्त संकट में पड़ा हुआ था। उनके साथ स्तुति करते हुए देवता भी आये।।31।। सरोवर के भीतर बलवान् ग्राह ने गजेन्द्र को पकड़ रखा था और वह अत्यन्त व्याकुल हो रहा था। जब उसने देखा कि आकाश में गरुड़ पर सवार होकर हाथ में चक्र लिये भगवान् श्रीहरि आ रहे हैं, तब अपनी सूँड़ में

कमल का एक सुन्दर पुष्प लेकर उसने ऊपर को उठाया और बड़े कष्ट से बोला–'नारायण! जगद्गुरो! भगवन्! आपको नमस्कार है'।।32।। जब भगवान् ने देखा कि गजेन्द्र अत्यन्त पीड़ित हो रहा है, तब वे एकबारगी गरुड़ को छोड़कर कूद पड़े और कृपा करके गजेन्द्र के साथ ही ग्राह को भी बड़ी शीघ्रता से सरोवर से बाहर निकाल लाये। फिर सब देवताओं के सामने ही भगवान् श्रीहरिने चक्र से ग्राह का मुँह फाड़ डाला और गजेन्द्र को छुड़ा लिया।।33।।

स्वयं भगवान् का वचन है कि 'जो रात्रि के शेष में (ब्राह्ममुहूर्त के प्रारम्भ में) जागकर इस स्तोत्र के द्वारा मेरा स्तवन करते हैं, उन्हें मैं मृत्यु के समय निर्मल मति (अपनी स्मृति) प्रदान करता हूँ।'

द्वितीय–याम–कीर्तन

(प्रातः लीला : भजन–साधु संगे अनर्थ निवृत्ति)
(6 दण्ड=2.24 मिनट : 5.46 से 8.10 मिनट तक)

नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति–
स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः।।1।।
एतादृशी तव कृपा भगवन् ! ममाऽपि,
दुर्दैवमीदृशमिहाजनि नाऽनुरागः।।2।।

श्रीचैतन्यमहाप्रभु विषाद और दैन्य में कहते हैं कि–''हे भगवन् ! जीवों की भिन्न–भिन्न रुचि को रखने के लिए ही तो, आपने अपने मुकुन्द, माधव, गोविन्द, दामोदर, घनश्याम, श्यामसुन्दर, यशोदानन्दन इत्यादि नाम रखे और प्रत्येक नाम में अपनी सम्पूर्ण शक्ति भी स्थापित कर दी एवं स्मरण के विषय में देश–काल–शुद्धाशुद्धि का भी नियम बन्धन तोड़ दिया। हाय प्रभो ! आपकी तो जीवों पर ऐसी अहैतुकी कृपादृष्टि वृष्टि है, तथापि मेरा तो ऐसा

दुर्भाग्य है कि आपके नाम में मुझे अनुराग उत्पन्न नहीं हुआ।।2।।

अनेक लोकेर–वाञ्छा अनेक प्रकार।
कृपा ते करिल अनेक नामेर प्रचार।।
खाइते–शुइते यथा–तथा नाम लय।
देश–काल–नियम नाहि, सर्वसिद्धि हय।।
सर्वशक्ति नामे दिला करिया विभाग।
आमार दुर्दैव, नामे नाहि अनुराग।।

(चै.च.अ. 20।17–19)

तुहुँ दयासागर तारयिते प्राणी,
नाम अनेक तुया शिखाओलि आनि।।1।।
सकल शकति देइ नामे तोहारा,
ग्रहणे राखलि नाहि कालविचारा।।2।।
श्रीनामचिन्तामणि तोहारि समाना,
विश्वे बिलाओलि करुणा–निदाना।।3।।

तुया दया ऐछन परम उदारा।
अतिशय मन्द, नाथ ! भाग हमारा।।4।।
नाहि जनमल नामे अनुराग मोर।
भकतिविनोद-चित्त-दुःखे विभोर।।5।।

राधां स्नातविभूषितां ब्रजपयाहूतां सखीभिः प्रगे,
तद्गेहे विहितान्नपाकरचनां कृष्णाऽवशेषाऽशनाम्।
कृष्णं बुद्धमवाप्तधेनुसदनं निर्व्यूढगोदोहनं,
सुस्नातं कृतभोजनं सहचरैस्तांचाथ तंचाश्रये।।2।।
(श्रीगोविन्दलीलामृत 2/1)

मैं उन श्रीमती राधिका का आश्रय लेता हूँ जो प्रातःकालीन स्नान के अनन्तर अलंकृत हुई हैं एवं व्रजेश्वरी के द्वारा बुलाई गई हैं तथा उन्हीं के घर में अपनी सखियों के साथ मिल-जुल कर, जिन्होंने श्रीकृष्णसेवार्थ रसोई बनाई है और श्रीकृष्ण के भोजन कर लेने के बाद, जिन्होंने उनका प्रसाद सेवन किया है मैं उन श्रीकृष्ण का आश्रय लेता हूँ

जिन्होंने प्रातःकाल जागकर गोशाला में जाकर, सखाओं के सहित गोदोहन किया है तथा भली प्रकार स्नान करके सखाओं के सहित भोजन किया है।

राधा स्नात-विभूषित, श्रीयशोदा समाहूत,
सखीसंगे तद्गृहे गमन।
तथा पाक विरचन, श्रीकृष्णावशेषाशन,
मध्ये मध्ये दुँहार मिलन।।
कृष्ण निद्रा परिहरि, गोष्ठे गोदोहन करि,
स्नानाशन सहचर संगे।
एइ लीला चिन्ता कर, नाम प्रेमे गरगर,
प्राते भक्तजन संगे रंगे।।

एइ लीला चिन्त आर कर संकीर्तन।
अचिरे पाइबे तुमि भाव उद्दीपन।।

तृतीय–याम–कीर्तन

(पूर्वाह्न लीला : भजन–निष्ठा भजन)

(6 दण्ड=2.24 मिनट : 8.10 से 10.34 मिनट तक)

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः।।3।।

श्रीचैतन्यमहाप्रभु कहते हैं कि–अपने को तृण से भी नीचा समझकर, वृक्ष से भी सहनशील बनकर, स्वयं अमानी होकर, दूसरों को मान देनेवाला बनकर, सदैव श्रीहरिनाम–संकीर्तन करता रहे।।3।।

उत्तम हञा आपनाके माने 'तृणाधम'।
दुइ प्रकारे सहिष्णुता करे वृक्षसम।।
वृक्ष येन काटिलेह किछुना बोलय।
शुखाइया मैले कारे पानी ना मागय।।
येइ ये मागये, तारे देय आपन धन।
घर्म–वृष्टि सहे, आनेर करये रक्षण।।

उत्तम हञा वैष्णव हबे निरभिमान।
जीवे सम्मान दिबे जानि 'कृष्ण'-अधिष्ठान।।
एइमत हञा येइ कृष्णनाम लय।
श्रीकृष्णचरणे ताँर प्रेम उपजय।।
(चै.च.अ.20.22-26)

श्रीकृष्णकीर्तने यदि मानस तोहार।
परम यतने तँहि लभ अधिकार।।1।।
तृणाधिक हीन, दीन, अकिञ्चन, छार।
आपने मानबि सदा छाड़ि' अहंकार।।2।।
वृक्षसम क्षमागुण करबि साधन।
प्रतिहिंसा त्यजि', अन्ये करबि पालन।।3।।
जीवन-निर्वाहे आने उद्वेग ना दिबे।
पर-उपकारे निज-सुख पासरिबे।।4।।
हइलेओ सर्वगुणे गुणी महाशय।
प्रतिष्ठाशा छाड़ि' कर अमानी हृदय।।5।।
कृष्ण-अधिष्ठान सर्वजीवे जानि' सदा।
करबि सम्मान सबे आदरे सर्वदा।।6।।

दैन्य, दया, अन्ये मान प्रतिष्ठा–वर्जन।
चारि गुणे गुणी हइ करह कीर्तन।।7।।
भक्तिविनोद काँदि' बले प्रभु–पाय।
हेन अधिकार कबे दिबे हे आमाय।।8।।

पूर्वाह्ने धेनुमित्रैर्विपिनमनुसृतं गोष्ठलोकानुजातं,
कृष्णं राधाप्तिलोलं तदभिसृति कृते प्राप्त तत्कुण्डतीरम्।
राधाञ्चालोक्य कृष्णं कृतगृहगमनामार्य्यर्काच्चर्नायै,
दिष्टां कृष्णप्रवृत्त्यै प्रहित निजसखीवर्त्मनेत्रां स्मरामि।।3।।
(श्रीगोविन्दलीलामृत 5/1)

मैं उन श्रीकृष्णचन्द्र का स्मरण करता हूँ जो पूर्वाह्न में गो–गण एवं मित्रों के सहित वृन्दावन में चल दिये हैं एवं श्रीनन्द–यशोदा आदि व्रजवासी लोग जिनके पीछे–पीछे चल रहे हैं तथा अपनी अनुनय–विनय से व्रजवासियों को लौटाकर, श्रीराधिका की प्राप्ति के लिए जो सतृष्ण हो रहे हैं, अतएव श्रीराधिका के अभिसार के लिए जो श्रीराधाकुण्ड

के तीर पर पहुँच गये हैं। मैं, उन श्रीमती राधिका का स्मरण करता हूँ जो वन में जाते हुए श्रीकृष्ण को देखकर, अपने घर चली जाती हैं एवं जटिला–नामक अपनी सास के द्वारा जो सूर्यपूजन के निमित्त वन में भेजी गई हैं तथा श्रीकृष्ण का वृत्तान्त जानने के लिए, अपने अपने द्वारा भेजी हुई, अपनी सखियों के मार्ग में, जो अपने नेत्रों को प्रेरित करती रहती हैं।

धेनु सहचर संगे, कृष्ण वने याय रंगे,
गोष्ठजन अनुव्रत हरि।
राधासंग लोभे पुनः, राधाकुण्ड तट वन,
याय धेनु संगी परिहरि।।
कृष्णेर इंगित पाञा, राधा निज गृहे याञा,
जटिलाज्ञा लय सूर्यार्चने।
गुप्ते कृष्णपथ लखि, कतक्षणे आइसे सखी,
व्याकुलिता राधा स्मरि मने।।

●

चतुर्थ–याम कीर्तन

(मध्याह्नलीला : भजन—रुचि भजन)

(12 दण्ड=4.48 मिनट : 10.34 से 3.22 मिनट तक)

न धनं न जनं न सुन्दरीं,
कवितां वा जगदीश ! कामये।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे,
भवताद्भक्तिरहैतुकी त्वयि।।4।।

हे जगदीश ! मैं, न धन चाहता हूँ, न जन चाहता हूँ, न सुन्दर कविता ही जानता हूँ। हे प्राणेश्वर ! मैं तो केवल यही चाहता हूँ कि आपके श्रीचरणकमलों में मेरी जन्म–जन्म में अहैतुकी भक्ति हो।।4।।

धन, जन नाहि मागों–कविता सुन्दरी।
शुद्धभक्ति देह' मोरे कृष्ण ! कृपा करि।।
अति दैन्ये पुनः मागे दास्यभक्ति–दान।
आपनाके करे संसारी–जीव अभिमान।।

(चै. च. अ. 20।30–31)

प्रभु ! तव पदयुगे मोर निवेदन।
नाहि मागि देह–सुख, विद्या, धन, जन।।1।।

नाहि मागि स्वर्ग आर मोक्ष नाहि मागि।
ना करि प्रार्थना कोन विभूतिर लागि'।।2।।

निजकर्म–गुण–दोषे ये ये जन्म पाई।
जन्मे जन्मे येन तव नाम–गुण गाइ।।3।।

एइमात्र आशा मम तोमार चरणे।
अहैतुकी भक्ति हृदे जागे अनुक्षणे।।4।।

विषये ये प्रीति एबे आछये आमार।
सेइमत प्रीति हउक चरणे तोमार।।5।।

विपदे सम्पदे ताहा थाकुक समभावे।
दिने दिने वृद्धि हउक नामेर प्रभावे।।6।।

पशु–पक्षी ह'ये थाकि स्वर्गे वा निरये।
तव भक्ति रहु भक्तिविनोद–हृदये।।7।।

मध्याह्नेऽन्योन्य संयोगित–
विविध विकारादि–भूषाप्रमुग्धौ,
वाम्योत्कण्ठातिलोलौ स्मरमख–
ललिताद्यालि–नर्माप्तशातौ।
दोलारण्यांबु वंशीहृति रति–
मधुपानार्क–पूजादिलीलौ,
राधाकृष्णौ सतृष्णौ परिजनघटया
सेव्यमानौ स्मरामि।।4।।
(श्रीगोविन्दलीलामृत 8/1)

मैं, उन श्रीराधाकृष्ण का स्मरण करता हूँ कि, जो मध्याह्नकाल में परस्पर के संग से प्रगट हुए, अनेक प्रकार के सात्त्विक विकार रूप भूषणों से अत्यन्त मनोहर हो रहे हैं एवं प्रेममयी कुटिलता तथा परस्पर मिलन की उत्कण्ठा से, जो अतिशय तृष्णायुक्त हो रहे हैं एवं कन्दर्परूप–यज्ञ में श्रीललिता–विशाखा आदि सखियों

के परिहासरूप शाकल्य से जो सुखी हो रहे हैं एवं जो दोललीला, वनविहार, जलविहार, वंशीविहार, रमण, मधुपान तथा सूर्यपूजा आदि लीलाओं में लगे रहते हैं और जो अपने अन्तरंग–सेवकसमुदाय के द्वारा समय के अनुसार सेवित होते रहते हैं।

राधाकुण्डे सुमिलन, विकारादि विभूषण,
वाम्योत्कण्ठ मुग्धभावलीला।

सम्भोग नर्मादि रीति, दोला खेला वंशीहृति,
मधुपान सूर्यपूजा खेला।।

जलखेला वन्याशन, छल सुप्ति वन्याटन,
बहु लीलानन्दे दुइजने।

परिजन सुवेष्ठित राधाकृष्ण सुसेवित,
मध्याह्नकालेते स्मरि मने।।

जय राधे, जय कृष्ण, जय वृन्दावन।
श्रीगोविन्द, गोपीनाथ, मदनमोहन।।1।।
श्यामकुण्ड, राधाकुण्ड, गिरि–गोवर्धन।
कालिन्दी यमुना, जय जय महावन।।2।।
केशीघाट, वंशीवट द्वादश–कानन।
याँहा सब लीला कैल श्रीनन्दनन्दन।।3।।
श्रीनन्द–यशोदा जय, जय गोपगण।
श्रीदामादि जय, जय धेनुवत्सगण।।4।।
जय वृषभानु, जय कीर्तिदासुन्दरी।
जय पौर्णमासी, जय आभीर नागरी।।5।।
जय जय गोपीश्वर–वृन्दावन माझ।
जय जय कृष्णसखा वटु द्विजराज।।6।।
जय रामघाट, जय रोहिणीनन्दन।
जय जय वृन्दावनवासी यत जन।।7।।
जय द्विजपत्नी, जय नागकन्यागण।
भक्तिते याँहारा पाइल गोविन्दचरण।।8।।

श्रीरासमण्डल जय, जय राधाश्याम।
जय जय रासलीला सर्व मनोरम।।9।।
जय जयोज्ज्वल-रस सर्वरस-सार।
परकीयाभावे याहा व्रजेते प्रचार।।10।।
श्रीजाह्नवा-पादपद्म करिया स्मरण।
दीन कृष्णदास कहे नाम संकीर्तन।।11।।

श्रीमती राधिका जी, श्रीकृष्ण जी, श्रीवृन्दावन धाम, श्रीगोविन्दजी, श्रीगोपीनाथजी, श्रीमदनमोहनजी की जय हो। श्यामकुण्ड, राधाकुण्ड, गिरिराजजी, यमुनाजी, महावन, केशीघाट, वंशीवट, द्वादशकानन आदि स्थलियाँ जहाँ-जहाँ श्रीनन्दनन्दन नाना प्रकार की लीलाएँ करते हैं, उन सब लीला स्थलियों की जय हो।

उनके अतिरिक्त कृष्ण के परिकर श्रीनन्दबाबा, यशोदा मैया, समस्त गोप, श्रीदाम आदि सखाओं एवं गोवत्सों की जय हो।

श्रीवृषभानु महाराज, श्रीकीर्तिदासुन्दरी, श्रीपौर्णमासी की जय हो। वृन्दावन में श्रीगोपीश्वर महादेव तथा कृष्ण के सखा ब्राह्मण श्रेष्ठ मधुमंगलजी की जय हो। श्रीराम घाट, श्रीरोहिणीनन्दन तथा अन्यान्य वृन्दावनवासियों की जय हो। ब्राह्मणपत्नियों एवं नागकन्याओं की जय हो जिन्होंने भक्ति के द्वारा गोविन्द के श्रीचरणों को प्राप्त कर लिया है। श्रीरासमण्डल, श्रीराधाश्याम एवं अत्यन्त ही मनोरम रासलीला की जय हो। समस्त रसों के सारस्वरूप उज्ज्वल रस–मधुररस की जय हो जिसका परकीया भाव के रूप में ब्रज में प्रचार है। श्रीजाह्नवाजी के श्रीचरणकमलों का स्मरण कर यह दीन–हीन कृष्णदास नामसंकीर्तन कर रहा है।

हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः।
यादवाय माधवाय केशवाय नमः।।1।।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन।
गिरिधारी गोपीनाथ मदनमोहन।।2।।

श्रीचैतन्य–नित्यानन्द श्रीअद्वैत सीता।
हरि गुरु वैष्णव भागवत गीता।।3।।
जय रूप सनातन भट्ट–रघुनाथ।
श्रीजीव गोपाल भट्ट दास–रघुनाथ।।4।।
एइ छय–गोसाञिर करि चरण–वन्दन।
याहा हैते विघ्ननाश अभीष्ट–पूरण।।5।।
एइ छय–गोसाञि याँर–मुञि ताँर दास।
ताँ’ सबार पदरेणु मोर पञ्च–ग्रास।।6।।
ताँदेर चरण सेवि भक्तसने वास।
जनमे–जनमे हय एइ अभिलाष।।7।।
एइ छय गोसाञि जबे ब्रजे कैला वास।
राधाकृष्ण–नित्यलीला करिला प्रकाश।।8।।
आनन्दे बलह हरि, भज वृन्दावन।
श्रीगुरु–वैष्णव–पदे मजाइया मन।।9।।
श्रीगुरु–वैष्णव–पादपद्म करि आश।
नाम–संकीर्त्तन कहे नरोत्तमदास।।10।।

तीनो तापों को हरण करने वाले हरि को मेरा नमस्कार है। समस्त जीवों को अपनी ओर आकर्षित करने वाले श्रीकृष्ण को नमस्कार है। यादव को, माधव को व केशव को मेरा नमस्कार है। गोपाल,गोविन्द, राम, श्रीमधुसूदन, गिरिधारी, गोपीनाथ, मदनमोहन, श्रीचैतन्य महाप्रभु, श्रीनित्यानन्द प्रभु, श्रीअद्वैताचार्य तथा अद्वैत-शक्ति श्रीमती सीता ठाकुरानी एवं हरिगुरु-वैष्णव, श्रीमद्भागवत व श्रीमद्भगवद्गीता - सभी को नमस्कार।

श्रीरूप गोस्वामी, श्रीसनातन गोस्वामी, श्रीरघुनाथ भट्ट गोस्वामी, श्रीजीव गोस्वामी, श्रीगोपाल भट्ट गोस्वामी तथा श्रीरघुनाथदास गोस्वामी–इन छः गोस्वामियों की जय हो। इन छः गोस्वामियों की मैं चरण वन्दना करता हूँ। कारण, इन छः गोस्वामियों की चरण वन्दना करने से समस्त विघ्न नाश हो जाते हैं तथा अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति होती है। ये छः गोस्वामी जिनके हैं, मैं उनका दास हूँ—इन सबकी

चरण रेणु ही मेरा पंच-ग्रास है, मैं इनके चरणों की सेवा करता रहूँ तथा भक्तों के साथ में मेरा वास हो। इन छः गोस्वामियों ने व्रजवास किया तो श्रीराधाकृष्ण जी की नित्यलीलाओं का प्रकाश किया। आनन्द के साथ मन से हरि हरि बोलो तथा वृन्दावन का भजन करो तथा श्रीगुरु-वैष्णवों के श्रीचरणों में अपने को लगा दो। श्रीनरोत्तम ठाकुर जी कहते हैं कि श्रीगुरु-वैष्णवों के पाद-पद्मों की (कृपा-प्राप्ति की) आशा से मैं हरिनाम संकीर्तन करता हूँ।

•

पंचम–याम–कीर्तन

(अपराह्न लीला : भजन—कृष्णासक्ति)
(6 दण्ड=2.24 मिनट : 3.22 से 5.46 मिनट तक)

अयि नन्दतनुज! किंकरं पतितं मां विषमे भवाम्बुधौ।
कृपया तव पादपंकजस्थित–धूलि–सदृशं विचिन्तय।।5।।

हे नन्दनन्दन ! वस्तुतः मैं आपका नित्यकिंकर हूँ, किन्तु अब निज कर्मदोष से विषय संसार–सागर में पड़ा हूँ। काम, क्रोध, मत्सरादि ग्राह मुझे निगलने को दौड़ रहे हैं। दुराशा दुश्चिन्ता की तरंगों में इधर–उधर बह रहा हूँ। कुसंगरूप–प्रबलवायु और भी व्याकुल कर रहा है। ऐसी दशा में आपके बिना मेरा कोई आश्रय नहीं है। कर्म, ज्ञान, योग, तप आदिक तृण–गुच्छों के समान इधर–उधर तैर रहे हैं, पर क्या उनका आश्रय लेकर कोई संसार–सागर के पार जा सकता है ? हाँ, कभी–कभी ऐसा तो होता है कि, संसार–सागर में डूबता हुआ जन, उसको भी पकड़कर

अपने साथ डुबा लेता है। आपकी कृपा के बिना और कोई आश्रय नहीं हो सकता है। केवल आपका नाम ही ऐसी दृढ़ नौका है जिसके आश्रय से यह जीव, संसारसिन्धु को पार कर सकता है, पर उसका आश्रय मिले, यह भी आपकी कृपा पर निर्भर है। आप शरणागतवत्सल हैं, मुझ अनाश्रित को, अपने चरणकमलों में संलग्न रजकण के समान जानें, आपकी करुणा के बिना, मुझ साधनशून्य का, संसार से निस्तार का कोई उपाय नहीं है।।5।।

तोमार नित्यदास मुञि, तोमा पासरिया।
पड़ियाछों भवार्णवे मायाबद्ध हञा।।
कृपा करि' कर मोरे पदधूलि–सम।
तोमार सेवक, करों तोमार सेवन।।
पुनः अति–उत्कण्ठा, दैन्य हइल उद्‌गम।
कृष्ण–ठाँइ माँगे प्रेम नामसंकीर्तन।।

(चै.च.अ. 20, 33–35)

अनादि करम–फले, पड़ि' भवार्णव–जले,
तरिबारे ना देखि उपाय
ए विषय–हलाहले, दिवानिशि हिया ज्वले,
मन कभु सुख नाहि पाय।।1।।
आशा–पाश शत शत, क्लेश देय अविरत,
प्रवृत्ति–ऊर्मिर ताहे खेला।
काम–क्रोध–आदि छय, बाटपाड़े देय भय,
अवसान हैल आसि' वेला।।2।।
ज्ञान–कर्म–ठग दुइ, मोरे प्रतारिया लइ',
अवशेषे फेले सिन्धुजले।
ए हेन समये बन्धु, तुमि कृष्ण कृपासिन्धु,
कृपा करि' तोल मोरे बले।।3।।
पतित किंकरे धरि', पादपद्म धूलि करि',
देह' भक्तिविनोदे आश्रय।
आमि तव नित्यदास, भुलिया मायार पाश,
बद्ध ह'ये आछि, दयामय।।4।।

श्रीराधां प्राप्तगेहां निजरमण–कृते क्लृप्तनानोपहारां,
सुस्नातां रम्यवेशां प्रियमुख कमलालोक पूर्णप्रमोदाम् ।
श्री कृष्णञ्चापराह्ने व्रजमनुचलितं धेनुवृन्दैर्वयस्यैः,
श्रीराधालोक तृप्तं पितृमुख मिलितं मातृमृष्टं स्मरामि ।।5।।

(गोविन्दलीलामृत 19/1)

मैं, उन श्रीमती राधिका का स्मरण करता हूँ जिन्होंने अपराह्नकाल में अपने घर पहुँच कर, भली प्रकार स्नान करके, रमणीय वेष धारण कर, अपने प्यारे श्यामसुन्दर के लिए, कर्पूरकेलि एवं अमृतकेलि आदि अनेक प्रकार के भोज्य उपहार बनाये हैं एवं वन से व्रज में आते समय, प्रियतम श्रीकृष्ण के मुखारविन्द के दर्शन से, जिनको पूर्ण हर्ष प्राप्त हो रहा है। मैं उन श्रीकृष्ण का स्मरण करता हूँ जो अपराह्न के समय गो–गण एवं सखाओं के सहित व्रज की ओर चल दिये हैं एवं मार्ग में मिली हुई श्रीराधिका के दर्शन से तृप्त हो रहे हैं तथा अपने पिता आदि व्रजवासियों

से जो प्रेमपूर्वक मिल रहे हैं एवं पश्चात् घर जा कर माँ यशोदा ने जिनको स्नान कराया है।।5।।

श्रीराधिका गृहे गेला, कृष्ण लागि विरचिला,
नानाविध खाद्य उपहार।
स्नात रम्य वेश धरि, प्रिय मुखेक्षण करि,
पूर्णानन्द पाइल अपार।।
श्रीकृष्णापराह्नकाले, धेनु मित्र लञा चले,
पथे राधामुख निरखिया।
नन्दादि मिलन करि, यशोदा मार्जित हरि,
स्मर मन आनन्दित हञा।।

।। श्रीराधिकायै नमः ।।

गीतम्

राधे ! जय जय माधवदयिते।
गोकुल–तरुणी मण्डल–महिते।।ध्रु0।।

दामोदर – रति – वर्धन – वेशे।
हरिनिष्कुट – वृन्दाविपिनेशे।।1।।

वृषभानुदधि – नवशशिलेखे।
ललितासखी ! गुणरमितविशाखे।।2।।

करुणां कुरु मयि करुणाभरिते।
सनक सनातन–वर्णित–चरिते।।3।।

राधे ! जय जय...

हे माधव ! हे प्रिये ! हे गोकुल–तरुणीपूजिते ! हे कृष्ण की रतिवर्द्धन–वेशधारिणी ! हे नन्दनन्दन के गृहोद्यानरूप वृन्दावन की अधीध्वरि ! हे श्रीराधिके ! तुम्हारी जय हो ! जय हो !

श्रीवृषभानु महाराजरूप समुद्र से उदित नवचन्द्रकला रूपिणि ! हे ललिता की प्रियसखी ! हे विशाखा के लिए सुखकर सौहार्द्र–कारुण्य–कृष्णानुकूल्यादि गुणों के द्वारा विशाखा को वशीभूतकारिणि ! हे कृपापूर्णे ! हे सनक–सनन्दन–सनत्–सनातन द्वारा वर्णित चरित वाली श्रीराधे ! तुम्हारी जय हो ! जय हो ! तुम मेरे प्रति करुणा करो।

।। श्रीकृष्णाय नमः ।।

श्रीगीतम्

(श्रीरूप गोस्वामीपादकृत)

देव ! भवन्तं वन्दे ।

मन्मानस–मधुकरमर्पय निज,
पद – पंकज – मकरन्दे ।।ध्रु0 ।।

यद्यपि समाधिषु विधिरपि पश्यति,
न तव नखाग्रमरीचिम् ।
इदमिच्छमि निशम्य तवाच्युत !
तदपि कृपाद्‌भुतवीचिम् ।।

भक्तिरुदञ्चति यद्यपि माधव !
न त्वयि मम तिलमात्री ।
परमेश्वरता तदपि तवाधिक–
दुर्घटघटन – विधात्री ।।

अयमविलोलतयाद्य सनातन,
कलिताद्भुत-रसभारम्।
निवसतु नित्यमिहामृतनिन्दनि,
विन्दन् मधुरिमसारम्।।

हे भगवान् श्रीकृष्ण ! मैं आपकी वन्दना करता हूँ। कृपया मेरे मनरूप भ्रमर को अपने चरणकमलों के मकरन्द में लगा लीजिये, अर्थात् उसको अपने चरणारविन्दों का रस चखा दीजिए ताकि वह अन्यत्र आसक्ति न करे। यद्यपि ब्रह्मा जी, समाधि में भी, तुम्हारे चरणनखों के अग्रभाग की एक किरण को भी नहीं देख पाते हैं, तो भी हे अच्युत ! तुम्हारी कृपा की आश्चर्यमयी तरंग को सुनकर अर्थात्-

न शक्यः स त्वया द्रष्टुमस्माभिर्वा बृहस्पते!
यस्य प्रसादं कुरुते स वै तं द्रष्टुमर्हति।।

अथापि ते देव ! पदाम्बुजद्वय
प्रसादलेशानुगृहीत एव हि।
(भा. 10/14/29)

इत्यादि उक्तियों से यह जानकर कि, आपकी प्राप्ति केवल आपकी कृपा से ही साध्य है, यह बात सुनकर, मैं यह चाहता हूँ। हे माधव ! यद्यपि तुम्हारे में मेरी तिलमात्र भी भक्ति प्रकट नहीं हो रही है, तो भी तुम्हारी परमेश्वरता तो अतिशय अघटित घटना का विधान करने वाली है, उसी के द्वारा मेरा मनोरथ पूरा कर दीजिए। हे सनातन ! तुम्हारे चरणारविन्द, अमृत का भी तिरस्कार करने वाले हैं, अतः मेरा मनरूप-मधुकर तृष्णारहित होकर, निश्चलतापूर्वक तुम्हारे चरणारविन्दों में ही नित्यनिवास करता रहे एवं अद्‌भुतरस के भार को तथा माधुर्य के सार को प्राप्त करता रहे, मेरी यही प्रार्थना है। भावार्थ है कि तुम्हारी कृपा श्रीसनातन गोस्वामी के द्वारा निर्णीत है।

•

षष्ठ–याम–कीर्तन

(सायं लीला : भजन—भाव)

(6 दण्ड=2.24 मिनट : 5.45 से 8.10 मिनट तक)

नयनं गलदश्रु–धारया वदनं गद्‌गद्‌रुद्धया गिरा।
पुलकैर्निचितं वपुः कदा तव नामग्रहणे भविष्यति?।।6।।

हे प्रभो ! आपका नाम ग्रहण करते समय, मेरे नयन अश्रुधारा से, मेरा मुख गद्‌गद वाणी से और मेरा शरीर पुलकावलियों से कब व्याप्त होगा ?।।6।।

प्रेमधन बिना व्यर्थ दरिद्र जीवन।
'दास' करि' वेतन मोरे देह' प्रेमधन।।

(चैतन्यचरितामृत)

अपराध–फले मम, चित्त–भेल वज्रसम,
तुया नामे ना लभे विकार।
हताश हइये हरि, तब नाम उच्च करि,
बड़ दुःखे डाकि बार–बार।।1।।

दीन दयामय करुणा–निदान।
भावबिन्दु देइ राखह पराण।।2।।
कबे तव नाम–उच्चारणे मोर।
नयने झरब दरदर लोर।।3।।
गदगद स्वर कण्ठे उपजब।
मुखे बोल आध, आध बाहिराब।।4।।
पुलके भरब शरीर हामार।
स्वेद–कम्प–स्तंभ हबे बारबार।।5।।
विवर्ण शरीरे हाराओबु ज्ञान।
नाम–समाश्रये धरबुँ पराण।।6।।
मिलब हामार किये ऐछे दिन।
रोओये भक्तिविनोद मतिहीन।।7।।

सायं राधां स्वसख्या
निजरमणकृते प्रेषितानेकभोज्यां,
सख्यानीतेश–शेषाशन–मुदितहृदं
तां च तं च ब्रजेन्दुम्।

सुस्नातं रम्यवेशं गृहमनु
जननी–लालितं प्राप्तगोष्ठं,
निर्व्यूढोस्त्रालिदोहं स्वगृहमनु
पुनर्भुक्तवन्तं स्मरामि।।6।।
(श्रीगोविन्दलीलामृत 20/1)

मैं श्रीमती राधिका का स्मरण करता हूँ जिन्होंने सायंकाल में अपनी सखी के द्वारा, अपने प्रियतम श्रीकृष्ण के लिए, अनेक प्रकार की भोज्यवस्तु भेज दी हैं, पश्चात् उसी सखी के द्वारा लाये हुए, अपने स्वामी श्रीकृष्ण के प्रसाद पाने से जिनका हृदय हर्षित हो रहा है। मैं उन श्रीकृष्ण का स्मरण करता हूँ जिन्होंने गोचारण के अनन्तर वन से घर में आकर, भली प्रकार स्नान किया है, मनोहर वेष धारण किया है, तथा माँ यशोदा के द्वारा जिनके ऊपर लाड़–चाव–प्यार किया गया है। पश्चात् गोशाला में पहुँच

कर जिन्होंने गोश्रेणी का दोहन किया है। उसके बाद नन्दभवन में जाकर जिन्होंने रात्रिभोजन किया है।।6।।

श्रीराधिका सायंकाले, कृष्ण लागि पाठाइले,
सखीहस्ते विविध मिष्टान्न।
कृष्णभुक्त शेष आनि, सखी दिल सुख मानि,
पाञा राधा हइल प्रसन्न।।
स्नात रम्यवेश धरि, यशोदा लालित हरि,
सखासह गोदोहन करे।
नानाविध पक्व अन्न, पाञा हैल परसन्न,
स्मरि आमि परम आदरे।।

•

सप्तम–याम–कीर्तन

(प्रदोष लीला : भजन–प्रेम–विप्रलम्भ)

(6 दण्ड=2.24 मिनट : 8.10 से 10.34 मिनट तक)

युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितम्।
शून्यायितं जगत् सर्वं गोविन्द विरहेण मे।।7।।

हे सखि ! गोविन्द के विरह में, मेरा निमेषमात्र काल भी युग के समान प्रतीत होता है। मेरी आँखों ने वर्षाऋतु का सा रूप धारण कर लिया है और यह समस्त जगत् मुझे शून्य सा प्रतीत होता है।।7।।

उद्वेगे दिवस ना याय, 'क्षण' हइल 'युग'–सम।
वर्षार मेघप्राय अश्रु वरिषे नयन।।
गोविन्द–विरहे शून्य हैल त्रिभुवन।
तुषानले पोड़े येन ना याय जीवन।।

(चै.च.अ. 20.40–41)

गाइते गाइते नाम कि दशा हइल।
'कृष्ण नित्यदास मुञि' हृदये स्फुरिल।।1।।
जानिलाम, मायापाशे ए जड़ – जगते।
गोविन्द–विरहे दुःख पाइ नाना मते।।2।।
आर ये संसार मोर नाहि लागे भाल।
काँहा याइ, कृष्ण हेरि–ए चिन्ता विशाल।।3।।
काँदिते काँदिते मोर आँखि बरिषय।
वर्षाधारा हेन चक्षे हइल उदय।।4।।
निमेष हइल मोर शतयुग सम।
गोविन्द विरह आर सहिते अक्षम।।5।।
शून्य धरातल, चौदिके देखिये, पराण उदास हय।
कि करि, कि करि, स्थिर नाहि हय, जीवन नाहिक रय।।6।।
व्रजवासिगण, मोर प्राण राख, देखाओ श्रीराधानाथे।
भकतिविनोद, मिनति मानिया, लओ हे ताहारे साथे।।7।।
(अधिकारिभेदे सप्तम गीत)

श्रीकृष्ण–विरह आर सहिते ना पारि।
पराण छाड़िते आर दिन दुइ चारि।।1।।
गाइते 'गोविन्द'–नाम उपजिल भावग्राम,
देखिलाम यमुनार कूले।
वृषभानुसुता–संगे, श्याम नटवर रंगे,
बाँशरी बाजाय नीपमूले।।2।।
देखिया युगल–धन, अस्थिर हइल मन,
ज्ञानहारा हइलुँ तखन।
कतक्षणे नाहि जानि, ज्ञान–लाभ हइल मानि,
आर नाहि भेल दर्शन।।3।।
सखि गो! केमते धरिब पराण।
निमेष हइल युगेर समान।।4।।
श्रावणेर धारा, आँखि बरिषय,
शून्य भेल धरातल।
गोविन्द–विरहे, प्राण नाहि रहे,
केमने बाँचिब बल।।5।।

भकतिविनोद, अस्थिर हइया,
पुनः नामाश्रय करि’।
डाके, राधानाथ ! दिया दर्शन,
प्राण राख, नहे मरि।।6।।

राधां सालीगणां तामसित–सित–निशायोग्यवेशां प्रदोषे,
दूत्या वृन्दोपदेशादभिसृत–यमुनातीर–कल्याणकुञ्जाम्।
कृष्णं गोपैः सभायां विहित–गुणि कलालोकनं स्निग्धमात्रा,
यत्नादानीय संशायितमथ निभृतं प्राप्तकुञ्जं स्मरामि।।
(श्रीगोविन्दलीलामृत 21/1)

मैं सखियों सहित उन श्रीमती राधिका का स्मरण करता हूँ जिन्होंने प्रदोषकाल में, कृष्णपक्ष एवं शुक्लपक्ष की रात्रियों में धारण करने योग्य वेष को धारण किया है एवं वृन्दादेवी के उपदेश से जिन्होंने अपनी अन्तरंग–दूती के साथ, यमुनातीरस्थ कल्पवृक्ष की निकुञ्ज में अभिसरण किया है। मैं उन श्रीकृष्ण का स्मरण करता हूँ जिन्होंने श्रीनन्दजी की

सभा में, समस्त गोपों के सहित, गुणीजनों के द्वारा दिखाई गई, अनेक कलाओं का अवलोकन किया है। पश्चात् स्नेहमयी माता के द्वारा, सभा से यत्नपूर्वक बुलवा कर, दुग्धपान करा कर, जिनका शयन कराया गया है। पश्चात् जो गुप्तरूप से संकेतकुञ्ज में पहुँच जाते हैं।।

राधा वृन्दा उपदेश, यमुनोपकुलदेशे,
सांकेतिक कुञ्जे अभिसरे।
सितासित निशायोग्य, धरि वेश कृष्णभोग्य,
सखीसंगे सानन्द अन्तरे।।
गोपसभा माझे हरि, नानागुणकला हेरि,
मातृयत्ने करिल शयन।
राधासंग सोडरिया, निभृते बाहिर हइया,
प्राप्तकुञ्ज करिये स्मरण।।

●

अष्टम–याम–कीर्तन

(रात्रिलीला : भजन–प्रेमभजन–सम्भोग)
(12 दण्ड=4.48 मिनट : 10.34 से 3.22 मिनट तक)

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु मा–
मदर्शनान्मर्महतां करोतु वा।
यथा तथा व विदधातु लम्पटो,
मत्प्राणनाथस्तु स एव नाऽपरः।।8।।

वह लम्पट अपनी पादसेवा में आसक्त, मुझ दासी को प्रगाढ़ आलिंगन से भींचे, किंवा अपने दर्शन न देकर, मुझे मर्माहत करते हुए पीड़ा भी पहुँचाये, या अपनी जो अभिरुचि हो सो करे, परन्तु वही मेरा प्राणनाथ है। उनके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है।।8।।

आमि कृष्णपद–दासी, तें हो रससुखराशि,
आलिंगिया करे आत्मसात।
किबा ना देय दरशन, ना जाने मोर तनुमन,
तबु तँ हो मोर प्राणनाथ।।

तावुत्कौ लब्धसंगौ बहुपरिचरणैर्वृन्दयाराध्यमानौ,
प्रेष्ठालीभिर्लसन्तौ विपिन विहरणैर्गानरासादिलास्यः।
नानालीला नितान्तौ प्रणयि सहचरीवृन्द संसेव्यमानौ,
राधाकृष्णौ निशायां सुकुसुमशयने प्राप्तनिद्रौ स्मरामि।।8।।
(श्रीगोविन्दलीलामृत 22/1)

मैं, उन श्रीश्रीराधाकृष्ण का स्मरण करता हूँ जो रात्रि में पहले परस्पर मिलने के लिए उत्कण्ठित हो रहे हैं। पश्चात् जिनको परस्पर मिलन प्राप्त हो गया है एवं वृन्दादेवी के द्वारा अनेक प्रकार की सेवाओं से जिनकी आराधना हो रही है। पश्चात् अपनी प्रियसखियों के सहित वनविहार, गायन, रासलीला आदि में किये गये नृत्यों से जो सुशोभित

हो रहे हैं तथा अनेक लीलाओं से परिश्रान्त होकर, जो प्रेमभरी सहचरीश्रेणी के द्वारा व्यंजन, शीतलजल, ताम्बूल एवं पादसंवाहन आदि के द्वारा सेवित हो रहे हैं, पश्चात् मनोहर पुष्प-शैया पर जो शयन कर रहे हैं।

वृन्दा परिचर्या पाञा, प्रेष्ठालिगणेरे लञा,
राधाकृष्ण रासादिक लीला।
गीतलास्य कैल कत, सेवा कैल सखी यत,
कुसुमशय्याय दुँहे शुइला।।
निशाभागे निद्रा गेल, सबे आनन्दित हैल,
सखीगण परानन्दे भासे।
ए सुख-शयन स्मरि, भज मन राधा-हरि,
सेइ लीला प्रवेशेर आशे।।

●

नगर-संकीर्तन

कार्तिक मास में नगर संकीर्तन प्रभात फेरी के प्रारम्भ में जय-ध्वनि व वन्दना के बाद मठ के आचार्यदेव, परम पूज्यपाद त्रिदण्डि स्वामी श्री श्रीमद्भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज जी द्वारा किया जाने वाला संकीर्तन।

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु दया कर मोरे।
तोमा बिना के दयालु जगत्-संसारे।।
पतितपावन-हेतु तव अवतार।
मो सम पतित प्रभु ना पाइबे आर।।
हा हा प्रभु नित्यानन्द ! प्रेमानन्द सुखी !
कृपावलोकन कर आमि बड़ दुःखी।।
दया कर सीतापति अद्वैत गोसाईं।
तव कृपा बले पाइ चैतन्य-निताई।।

दया कर गौर शक्ति पण्डित गदाधर।
श्रीवासादि भक्तवृन्द मोरे दया कर।।
हा हा स्वरूप, सनातन, रूप, रघुनाथ।
भट्टयुग, श्रीजीव, हा प्रभु लोकनाथ।।
दया कर श्रीआचार्य, प्रभु श्रीनिवास।
रामचन्द्र संग माँगे नरोत्तमदास।।
दया कर प्रभुपाद श्रीदयित दास।
तव पद छाया माँगे ए अधम दास।।
दया कर गुरुदेव पतितपावन।
तव पद कृपा माँगे दीन अकिंचन।।

श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु जी ! मुझ पर दया कीजिए। आपको छोड़ और दयालु है ही कौन इस जगत् में। पतितों को पावन करने के लिए ही आपका अवतार हुआ है। और मेरे जैसा पतित, प्रभु ! आपको और कोई नहीं मिलेगा। हा ! हा ! नित्यानन्द प्रभो ! आप तो हमेशा ही प्रेमानन्द में विभोर रहते हैं, मेरी ओर कृपा अवलोकन कीजिए। हे प्रभु !

मैं बहुत दुखी हूँ। हे सीतापति श्रीअद्वैत गोस्वामी ! मुझ पर दया कीजिए। आपके कृपाबल से ही श्रीचैतन्य महाप्रभु और श्रीनित्यानन्द प्रभु की प्राप्ति होती है। हे गौर-शक्ति पण्डित गदाधर जी ! मुझ पर दया करो। हे श्रीवासादि भक्तवृन्द ! आप भी सभी मुझ पर दया करो। हा हा स्वरूप दामोदर प्रभु ! हे सनातन गोस्वामी ! हे श्रीरूप गोस्वामी ! हे रघुनाथदास गोस्वामी ! हे रघुनाथ भट्ट गोस्वामी! हे गोपाल भट्ट गोस्वामी ! हे श्रीजीव गोस्वामी ! हा लोकनाथ प्रभु ! मुझ पर कृपा कीजिए। हे श्रीनिवास आचार्य प्रभु! आप मुझ पर दया कीजिए, ये नरोत्तमदास श्रीरामचन्द्र कविराज जी के संग की प्रार्थना करता है। (श्रीदयितदास प्रभुपाद जी ! आप मुझ पर दया करें, ये अधमदास आपकी चरण-छाया की प्रार्थना करता है। पतित पावन श्रील गुरुदेव जी ! मुझ पर दया कीजिए, ये दीन अकिंचन आपकी कृपा प्रार्थना करता है।)

जय दाओ जय दाओ

(अर्थात् जय दीजिए जय दीजिए)

पतितपावन गुरुदेवेर, जय दाओ जय दाओ
करुणामय गुरुदेवेर, जय दाओ जय दाओ
जय गुरुदेव बोले, जय दाओ जय दाओ
श्रीमाधव गोस्वामी विष्णुपादेर, जय दाओ जय दाओ
पतितपावन प्रभुपादेर, जय दाओ जय दाओ
करुणामय प्रभुपादेर, जय दाओ जय दाओ
जगद्गुरु प्रभुपादेर, जय दाओ जय दाओ
जय प्रभुपाद बोले, जय दाओ जय दाओ
गौरकिशोरदास बाबाजीर, जय दाओ जय दाओ
भक्तिविनोद ठाकुरेर, जय दाओ जय दाओ
जगन्नाथदास बाबाजीर, जय दाओ जय दाओ
बलदेव विद्याभूषणेर, जय दाओ जय दाओ

विश्वनाथ चक्रवर्तीर, जय दाओ जय दाओ
नरोत्तम ठाकुरेर, जय दाओ जय दाओ
श्यामानन्द प्रभुवरेर, जय दाओ जय दाओ
श्रीनिवास आचार्येर, जय दाओ जय दाओ
कृष्णदास कविराजेर, जय दाओ जय दाओ
श्रीस्वरूप दामोदरेर, जय दाओ जय दाओ
रूपानुग गुरुवर्गेर, जय दाओ जय दाओ
गौरांगेर भक्त वृन्देर, जय दाओ जय दाओ
श्रीवास पण्डितेर, जय दाओ जय दाओ
गौरशक्ति गदाधरेर, जय दाओ जय दाओ
नामाचार्य हरिदासेर, जय दाओ जय दाओ
सीतापति श्रीअद्वैतेर, जय दाओ जय दाओ
पतितपावन नित्यानन्देर, जय दाओ जय दाओ
करुणामय नित्यानन्देर, जय दाओ जय दाओ
जय नित्यानन्द बोले, जय दाओ जय दाओ

पतितपावन श्रीगौरांगेर, जय दाओ जय दाओ
करुणामय श्रीगौरांगेर, जय दाओ जय दाओ
जय श्रीगौरांग बोले, जय दाओ जय दाओ
निताइ–गौरांग बोले, जय दाओ जय दाओ

निताइ–गौरांग, निताइ–गौरांग
एइ बार आमाय दया करो, निताइ–गौरांग
अपराध क्षमा करो, निताइ–गौरांग
सेवा अधिकार दाओ, निताई–गौरांग

नित्यानन्द हे ! गौरहरि हे !
कहाँ नित्यानन्द ! कहाँ गौरहरि !
कहाँ नित्यानन्द ! कहाँ गौरहरि !

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

श्रीराधाकुण्ड

ऊर्ध्वाम्नायतन्त्रे शिव–गौरी संवादे

श्रीराधाकृपाकटाक्ष स्तवराज

ध्यान

**श्यामां गोरोचनाभां स्फुरदसितपट–प्राप्तिरम्यावगुण्ठां
रम्यां धन्यांस्व वेणीसुचिकुरनिकरालंब पादां किशोरीम्।
तर्जन्यंगुष्ठयुक्तं हरिमुखकुहरे युञ्जतीं नागवल्ली–
पर्णं कर्णायताक्षीं त्रिभुवनमधुरां राधिकां भावयामि।।**

श्रीशिव उवाच

**मुनीन्द्रवृन्दवन्दिते त्रिलोकशोकहारिणि
प्रसन्नवक्त्रपंकजे निकुंज–भू–विलासिनि।
व्रजेन्द्र–भानुनन्दिनि व्रजेन्द्रसूनु–संगते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।1।।**

अशोक–वृक्ष–वल्लरी वितान–मण्डप–स्थिते
प्रवालवाल–पल्लव प्रभाऽरुणांघ्रि–कोमले।
वराभयस्फुरत्करे प्रभूतसम्पदालये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष–भाजनम्।।2।।
अनंग – रंग – मंगल – प्रसंग – भंगुरभ्रुवां
सविभ्रमं ससम्भ्रमं दृगन्त–बाण पातनैः।
निरन्तरं वशीकृत–प्रतीत नन्दनन्दने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।3।।
तडित्–सुवर्ण–चम्पक–प्रदीप्त–गौर–विग्रहे
मुख–प्रभा–परास्त–कोटि–शारदेन्दुमण्डले।
विचित्र – चित्र – संचरच्चकोर – शावलोचने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष–भाजनम्।।4।।
मदोन्मदाति–यौवने प्रमोद–मान–मण्डिते
प्रियानुराग रंजिते कला–विलास–पण्डिते।
अनन्य धन्य कुंजराज्य कामकेलि कोविदे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष–भाजनम्।।5।।

अशेष–हाव–भाव–धीर–हीर–हार भूषिते
प्रभूतशातकुम्भ–कुम्भ कुम्भि कुम्भ सुस्तनि।
प्रशस्त मन्दहास्यचूर्ण पूर्ण सौख्यसागरे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष–भाजनम्।।6।।

मृणाल–वाल–वल्लरी–तरंग–रंग–दोर्लते
लताग्र लास्य लोल नील–लोचनावलोकने।
ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञ मुग्ध मोहनाश्रिते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष–भाजनम्।।7।।

सुवर्णमालिकाञ्चित–त्रिरेख कम्बु–कण्ठगे
त्रिसूत्र मंगलीगुण त्रिरत्नदीप्ति दीधिते।
सलोल नीलकुन्तल–प्रसून गुच्छ–गुम्फिते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष–भाजनम्।।8।।

नितम्बबिम्ब–लम्बमान–पुष्पमेखलागुणे
प्रशस्तरत्न–किंकिणी कलापमध्य मंजुले।
करीन्द्रशुण्ड दण्डिका वरोहसौभगोरुके
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष–भाजनम्।।9।।

अनेक मन्त्रनाद–मंजु नूपुरारवस्खलत्
समाज राजहंस–वंश–निक्वणातिगौरवे।
विलोलहेम वल्लरी विडम्बिचारु–चंक्रमे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष–भाजनम्।।10।।

अनन्त कोटि विष्णुलोक नम्र–पद्मजार्चिते
हिमाद्रिजा–पुलोमजा–विरंचिजा–वरप्रदे।
अपार सिद्धि ऋद्धि दिग्ध सत्पदांगुलीनखे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष–भाजनम्।।11।।

मखेश्वरि क्रियेश्वरि स्वधेश्वरि सुरेश्वरि
त्रिवेद–भारतीश्वरि प्रमाण–शासनेश्वरि।
रमेश्वरि क्षमेश्वरि प्रमोद–काननेश्वरि
ब्रजेश्वरि ब्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तु ते।।12।।

इतीदमद्भुतं स्तवं निशम्य भानुनन्दिनी।
करोतु संततं जनं कृपाकटाक्ष–भाजनम्।।13।।

भवेत्तदैव संचित त्रिरूप–कर्म–नाशनं।
भवेत्तदा व्रजेन्द्रसूनु मण्डल–प्रवेशनम्।।14।।

राकायां च सिताष्टम्यां दशम्यां च विशुद्धधीः।
एकादश्यां त्रयोदश्यां यः पठेत्साधकः सुधीः।।15।।

यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति साधकः।
राधाकृपाकटाक्षेण भक्तिः स्यात् प्रेमलक्षणा।।16।।

उरुदघ्ने नाभिदघ्ने हृद्दघ्ने कण्ठदघ्ने च।
राधाकुण्डजले स्थित्वा यः पठेत् साधकः शतम्।।17।।

तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्यात् वाक्सामर्थ्य ततो लभेत्।
ऐश्वर्यं च लभेत् साक्षाद्दृशा पश्यति राधिकाम्।।18।।

तेन सा तत्क्षणादेव तुष्टा दत्ते महावरम्।
येन पश्यति नेत्राभ्यां तत् प्रियं श्यामसुन्दरम्।।19।।

नित्यलीला–प्रवेशं च ददाति हि व्रजाधिपः।
अतः परतरं प्राप्यं वैष्णवानां न विद्यते।।20।।

ध्यान—जो नव तरुणी, गोरोचन-कान्तिशालिनी हैं, जिन्होंने नीलवर्ण की रेशमी ओढ़नी से मनोहर घूँघट लगा रखा है, एवं जिनकी घुँघराले स्निग्ध केशकलापों की गुँथी विशाल वेणी पीछे चरणों तक लटक कर धन्य-धन्य हो रही है, जो तर्जनी अँगुली एवं अँगूठे में धारण किये हुए ताम्बूल को प्रियतम श्रीकृष्ण के मुख में अर्पण कर रही हैं, कानों तक विस्तृत विशाल लोचना, त्रिभुवन मनहारिणी श्रीराधिका का मैं ध्यान करता हूँ।।

भावार्थ—श्रीशिवजी ने कहा—मुनीन्द्रवृन्द जिनके चरणों की वन्दना करते हैं तथा जो तीनों लोकों का शोक दूर करने वाली हैं, मुसकानयुक्त प्रफुल्लित मुख-कमल वाली, निकुंज-भवन में विलास करने वाली, व्रजराज श्रीवृषभानु की राजकुमारी, श्रीव्रजराज नन्दकुमार श्रीकृष्ण की संगिनी श्री राधिके ! कब मुझे अपने कृपा-कटाक्ष का पात्र बनाओगी।।1।।

अशोक की लताओं से बने हुए ‘लतामन्दिर’ में विराजमान, मूँगे तथा लाल-लाल पल्लवों के समान अरुण कान्तियुक्त कोमल चरणों वाली, भक्तों को अभीष्ट अभय दान देने के लिये उत्सुक रहने वाले कर-कमलों वाली, अपार ऐश्वर्य की आलय स्वामिनि श्रीराधे ! मुझे कब अपने कृपाकटाक्ष का अधिकारी बनाओगी ? । ।2 । ।

प्रेम-क्रीड़ा के रंगमंच पर मंगलमय प्रसंग में बाँकी भ्रुकुटी करके, आश्चर्य उत्पन्न करते हुए सहसा कटाक्ष रूपी बाणों की वर्षा से श्रीनन्दनन्दन को निरन्तर वश में करने वाली, हे सर्वेश्वरी ! अपने कृपाकटाक्ष का पात्र मुझे कब बनाओगी ? । ।3 । ।

बिजली, स्वर्ण तथा चम्पक के पुष्प के समान सुनहरी कान्ति से देदीप्यमान गोरे अंगों वाली, अपने मुखारविन्द की कान्ति से करोड़ों शरच्चन्द्रों को जीतने वाली, क्षण-क्षण में विचित्र चित्रों की छटा दिखाने वाले चंचल चकोर के बच्चे

के सदृश विलोचनों वाली, हे जगज्जननि ! क्या कभी मुझे अपने कृपाकटाक्ष का अधिकारी बनाओगी?।।4।।

अपने अत्यन्त रूप–यौवन के मद से मत्त रहने वाली, आनन्द भरे मान से विभूषिता, प्रियतम के अनुराग में रंगी हुई, विलास में प्रवीणा, एकान्त धन्य निकुञ्ज राज्य में प्रेम कौतुक विद्या की विद्वान् श्रीराधिके ! मुझे अपने कृपाकटाक्ष का पात्र कब बनाओगी ?।।5।।

सम्पूर्ण हाव–भावरूपी शृंगारों तथा धीरता एवं हीरे के हारों से विभूषित अंगों वाली, शुद्ध स्वर्ण के कलशों के समान एवं गयन्दिनी के गण्डस्थल के समान मनोहर पयोधरों वाली, प्रशंसित मन्द मुसकान से परिपूर्ण आनन्दसिन्धु सदृशा श्रीराधिके ! क्या मुझे कभी अपनी कृपा दृष्टि से कृतार्थ करोगी?।।6।।

जल की लहरों से हिलते हुए कमल के नवीन नाल के समान कोमल भुजाओं वाली, पवन से जैसे लता का एक

अग्रभाग नाचता है ऐसे चंचल लोचनों से अवलोकन करने वाली, ललचाते हुए लोभी एवं मिलन में मन को हरने वाले मुग्ध मनमोहन की आश्रिता श्रीवृषभानु–किशोरि ! कब अपनी कृपा अवलोकन द्वारा मुझे मायाजाल से छुड़ाओगी।।7।।

स्वर्ण की मालाओं से विभूषिता तथा तीन रेखाओं वाले शंख की छटा सदृश सुन्दर कण्ठ वाली, लटकते हुए देदीप्यमान तीन रत्नों से जटित मंगलत्रिसूत्र को धारण करने वाली, दिव्य पुष्पों के गुच्छों से गूँथे हुए काले घुंघराले लहराते केशों वाली, हे सर्वेश्वरी श्रीराधे ! कब मुझे अपनी कृपादृष्टि से देखकर अपने चरणकमलों के दर्शन का अधिकारी बनाओगी ?।।8।।

नितम्बों में विशाल पुष्पों की मेखला धारण करने वाली, कटिदेश में मणिमय किंकिणी के मधुरकलाप से युक्त, गजेन्द्र की सूँड़ के समान श्रेष्ठ जंघाओं वाली श्रीराधे

महारानी ! मुझपर कृपा करके कब संसार–सागर से पार करोगी ?।।9।।

अनेकों वेदमन्त्रों की सुमधुर झंकार करने वाले स्वर्णमय नूपुरों से मनोहर हंसों की पंक्ति कूजन का गौरव धारण करने वाली, चलते समय लहराती स्वर्णलता सदृश अंगों वाली, हे जगदीश्वरी श्रीराधे ! क्या कभी मैं आपके चरणकमलों की दासी हो सकूँगी?।।10।।

अनन्तकोटि वैकुण्ठों की स्वामिनि श्रीलक्ष्मी से पूजिता, तथा श्रीपार्वती, इन्द्राणी को और सरस्वती को वर प्रदान करने वाली, चरणकमलों की एक अंगुली के नख का ध्यान करने मात्र से अपार ऋद्धि–सिद्धियों को देने वाली, हे करुणामयि ! आप कब मुझको कृपा भरी दृष्टि से देखोगी ?।।11।।

सब प्रकार के यज्ञों की स्वामिनी, सम्पूर्ण क्रियाओं की स्वामिनी, स्वधादेवी की स्वामिनी, सब देवताओं की

स्वामिनी, ऋग्, यजु, साम, इन तीनों वेदों की वाणियों की स्वामिनी, प्रमाण शासन–शास्त्र की स्वामिनी, श्रीरमादेवी की स्वामिनी, श्रीक्षमादेवी की स्वामिनी और (अयोध्या के) प्रमोदवन की स्वामिनी अर्थात् श्रीसीता–स्वरूपा हे श्रीराधिके ! कब मुझे कृपाकर अपनी शरण में स्वीकार करके पराभक्ति प्रदान करोगी? हे व्रजेश्वरी ! हे ब्रज की अधिष्ठात्री श्रीराधिके ! आपको मेरा बारम्बार प्रणाम है । ।12 । ।

फलश्रुति—

इस विचित्र स्तुति को सुनकर श्रीराधाजी सर्वदा के लिये पाठकर्ता को अपना कृपाकटाक्ष–भाजन बना लेती हैं । ।13 । । उससे प्रारब्ध, संचित और क्रियमाण इन तीनों प्रकार के कर्मों का नाश हो जाता है । उसी क्षण श्रीकृष्णचन्द्र के नित्य लीला–मण्डल में प्रवेश का अधिकार मिल जाता है । ।14 । ।

पूर्णिमा के दिन, शुक्लपक्ष की अष्टमी अथवा दशमी को तथा दोनों पक्षों की एकादशी और त्रयोदशी को जो शुद्ध-चित्त वाला भक्त इस स्तोत्र का पाठ करेगा, वह जो जो कामना करेगा वही पूर्ण होगी। निष्काम भावना से इसका पाठ करने पर श्रीराधाजी की कृपादृष्टि से प्रेमलक्षणा भक्ति प्राप्त होगी।।15-16।।

इस स्तोत्र के पाठ से श्रीराधाकृष्ण का साक्षात्कार होता है। उसकी विधि इस प्रकार है—श्रीराधाकुण्डके जल में जंघाओं तक या नाभि पर्यन्त या छाती तक या कण्ठ तक खड़े होकर इस स्तोत्र का 100 बार पाठ करें। इस प्रकार कुछ दिन पाठ करने पर सम्पूर्ण मनोवांछित पदार्थ भी प्राप्त हो जाते हैं, वाक् सिद्धि-शक्ति प्राप्ति होती है। दर्शनार्थी भक्त को इन्हीं नेत्रों से साक्षात् श्रीराधाजी का दर्शन होता है। श्रीराधाजी प्रकट होकर प्रसन्नतापूर्वक महान् वरदान देती हैं (अथवा अपने चरणों का महावर भक्त के मस्तक

पर लगा देती हैं) जिससे तत्काल ही श्रीश्यामसुन्दर के साक्षात् दर्शन प्राप्त हो जाते हैं। इससे बढ़कर वैष्णवों के लिए कोई भी काम्य वस्तु नहीं है।।20।। (किसी–किसी को राधाकुण्ड के जल में 100 पाठ करने पर एक ही दिन में दर्शन हो जाता है। किसी–किसी को महीनों में होता है। अपने घर में ही 100 पाठ रोज करने से कुछ दिनों में इष्ट प्राप्ति हो जाती है।)

(अनुवाद : व्रजविभूति श्रीश्यामदास जी)

इति ऊर्ध्वाम्नायतंत्रे शिवगौरीसंवादे
श्रीराधाकृपाकटाक्षस्तवराजः सम्पूर्णः।।

श्रीगिरिराज जी महाराज

श्रीकृष्णकृपाकटाक्ष स्तोत्र

ध्यान

बर्हापीड़ाभिरामं मृगमद–तिलकं कुण्डलाक्रांतगण्डं
कञ्जाक्षं कम्बुकण्ठं स्मितसुभगमुखं स्वाधरे न्यस्तवेणुम्।
श्यामं शान्तं त्रिभंगं रविकरवसनं भूषितं वैजयन्त्या
वन्दे वृन्दावनस्थं युवतिशतवृतं ब्रह्म गोपालवेशम्।।

भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं
स्वभक्तचित्तरंजनं सदैव नन्दनन्दनम्।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं
अनंगरंगसागरं नमामि कृष्णनागरम्।।1।।

मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनं
विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम्।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णवारणम्।।2।।

कदम्बसूनुकुंडलं सुचारुगण्डमंडलं
व्रजांगनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम्।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम्।।3।।
सदैव पादपंकजं मदीयमानसे निजं
दधानमुत्तमालकं नमामि नन्दबालकम्।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं
समस्तगोपमानसं नमामि कृष्णलालसम्।।4।।
भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं
यशोमतीकिशोरकं नमामि दुग्धचोरकम्।
दृगन्तकान्तभंगिनं सदासदालिसंगिनं
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम्।।5।।
गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपावरं
सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम्।
नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटं
नमामि मेघसुन्दरं तडित्प्रभालसत्पटम्।।6।।

समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोहनं
नमामि कुंजमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम्।
निकामकामदायकं दृगन्तचारुसायकं
रसालवेणुगायकं नमामि कुंजनायकम्।।7।।
विदग्ध गोपिकामनो–मनोज्ञ–तल्पशायिनं,
नमामि कुंजकानने प्रवृद्धवह्निपायिनम्।
किशोरिकान्ति रंजितं दृगंजनं सुशोभितं,
गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम्।।8।।
यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्ण सत्कथा
मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम्।।
प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान्।
भवेत् स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान्।।9।।

जिन्होंने सिरपर मनोहर मोरमुकुट, माथे पर कस्तूरी का तिलक धारण कर रखा है, जिनके कुण्डलों से विभूषित कपोल, कमल जैसे नयन, शंख सदृश कण्ठ, तथा मन्द

मुसकानयुक्त सुन्दर मुख मण्डल है, जिन्होंने अधरों पर वेणु धारण कर रखी है, श्यामल कान्ति, करुण स्वभाव, ललित–त्रिभंग हैं, कटि में पीताम्बर, गले में वैजयन्तीमाला धारण कर, श्रीवृन्दावन में जो शत–शत व्रजरमणियों के मध्य अवस्थित हैं, उन गोपाल वेशधारी परब्रह्म श्रीकृष्ण की मैं वन्दना करता हूँ।

व्रजमण्डल के भूषण–स्वरूप तथा समस्त पापों के नाश करने वाले, अपने भक्तों के चित्त को आनन्द देने वाले श्रीनन्दनन्दन का मैं सर्वदा भजन करता हूँ। जिनके मस्तक पर मनोहर मोरपंखों के गुच्छे हैं, जिनके हाथों में सुरीली मुरली है तथा जो प्रेम तरंगों के समुद्र हैं, उन नटनागर श्रीकृष्ण भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ।1।।

कामदेव का गर्वनाश करने वाले, बड़े–बड़े चंचल लोचनों वाले, ग्वाल–बालों का शोक नष्ट करने वाले कमललोचन श्रीकृष्ण को मेरा नमस्कार है। करकमल पर गोवर्धन पर्वत

धारण करने वाले, मुसकानभरी सुन्दर चितवन वाले, इन्द्र का मान मर्दन करने वाले, गजराज–रूप श्रीकृष्णभगवान् को मेरा नमस्कार है।।2।।

कदम्ब–पुष्प के कुण्डल धारण करने वाले, अत्यन्त सुन्दर गोल कपोलों वाले, व्रजांगनाओं के प्रियतम, दुर्लभ श्रीकृष्ण भगवान् को मेरा नमस्कार है। ग्वाल–बाल और श्रीनन्दरायजी के सहित मोदमयी यशोदाजी को आनन्द देने वाले गोपनायक श्रीकृष्ण को मेरा नमस्कार है।।3।।

मेरे हृदय में सदा अपने चरणकमलों की स्थापना करने वाले, सुन्दर घुँघराली अलकों वाले श्रीनन्दलाल को मैं नमस्कार करता हूँ। समस्त दोषों को भस्म कर देने वाले, समस्त लोकों का पालन करने वाले, समस्त गोपकुमारों के हृदय तथा श्रीनन्दरायजी की वात्सल्य–लालसा के आधार श्रीकृष्ण को मेरा नमस्कार है।।4।।

भूमि का भार उतारने वाले, भवसागर से तारने वाले

कर्णधार, श्रीयशोदाकिशोर माखनचोर को मेरा नमस्कार है। कमनीय कटाक्ष चलाने की कला में प्रवीण, सर्वदा नित्य किशोरियों के संगी, नित्य नये-नये प्रतीत होने वाले, श्रीनन्दलाल को मेरा नमस्कार है।।5।।

गुणों की खानि और आनन्द के निधान, कृपा करने वाले, तथा कृपा के वर दाता, देवताओं के शत्रु दैत्यों का नाश करने वाले, गोपनन्दन श्रीकृष्ण को मेरा नमस्कार है। नवीन गोपसखा, नवीन-नवीन केलि-लम्पट, घनश्याम अंगों वाले और बिजली सदृश सुन्दर पीताम्बरधारी श्रीकृष्ण भगवान् को मेरा नमस्कार है।।6।।

समस्त गोपों को आनन्दित करने वाले, हृदयकमल को प्रफुल्लित करने वाले, निकुंज के बीच में विराजमान प्रसन्नमन सूर्य के समान प्रकाशमान श्रीकृष्ण को मेरा नमस्कार है। सम्पूर्ण अभिलषित कामनाओं को पूर्ण करने वाले, बाणों के समान चोट करने वाली चितवन वाले, मधुर

मुरली में गीत गाने वाले निकुंजनायक को मैं नमस्कार करता हूँ।।7।।

चतुर गोपिकाओं के मन की मनोरम शय्या पर शयन करने वाले, कुंजवन में बढ़ी हुई अग्नि का पान करने वाले तथा श्रीकिशोरी जी की अंग कान्ति से आनन्दित होने वाले, आँखों में शोभायमान अंजन वाले, गजेन्द्र को मोक्ष देने वाले तथा श्रीजी के साथ विहार करने वाले श्रीकृष्ण को मैं नमस्कार करता हूँ।।8।।

जहाँ कहीं भी जैसी परिस्थिति में मैं रहूँ, सदा श्रीकृष्णचन्द्र की सरस कथाओं का मेरे द्वारा सर्वदा गान होता रहे—बस ऐसी कृपा बनी रहे। 'श्रीराधाकृपा-कटाक्ष स्तोत्र' एवं 'श्रीकृष्णकृपा-कटाक्ष स्तोत्र' इन दोनों सिद्ध स्तोत्रों को प्रातःकाल उठ कर भक्ति-भाव में स्थित होकर जो व्यक्ति नित्य पाठ करता है, उसको जन्म-जन्म में श्रीकृष्णभक्ति की प्राप्ति होती है।।9।। ●

दो मिनट में भगवान् का दर्शन

(श्री अनिरुद्ध दास अधिकारी)

श्रीमद्भागवत पुराण में कथा आती है कि खट्वांग को दो घड़ी में भगवान् के दर्शन हो गये थे, परन्तु मेरे श्रील गुरुदेव परमाराध्यतम नित्यलीलाप्रविष्ट विष्णुपाद 108 श्रीश्रीमद् भक्तिदयित माधव गोस्वामी महाराज ने कहा है कि यदि कोई भी व्यक्ति हर रोज़ नीचे लिखी तीनों प्रार्थनाओं को करे, जिसमें दो मिनट का समय लगता है, तो उसे निश्चित रूप से इसी जन्म में भगवद्-प्राप्ति हो जायेगी। यह तीनों प्रार्थनाएँ सभी ग्रन्थों, वेदों तथा पुराणों का सार हैं।

पहली प्रार्थना

रात को सोते समय भगवान् से प्रार्थना करो – ''हे मेरे प्राणनाथ गोविन्द ! जब मेरी मौत आवे और मेरे अंतिम सांस के साथ, जब आप मेरे तन से बाहर निकलो तब आपका नाम उच्चारण करवा देना। भूल मत करना।''

दूसरी प्रार्थना

प्रातःकाल उठते ही भगवान् से प्रार्थना करो – ''हे मेरे प्राणनाथ ! इस समय से लेकर रात को सोने तक, मैं जो कुछ भी कर्म करूँ, वह सब आपका समझ कर ही करूँ और जब मैं भूल जाऊँ, तो मुझे याद करवा देना।''

तीसरी प्रार्थना

प्रातःकाल स्नान इत्यादि करने तथा तिलक लगाने के बाद भगवान् से प्रार्थना करो – ''हे मेरे प्राणनाथ ! गोविन्द! आप कृपा करके मेरी दृष्टि ऐसी कर दीजिये कि मैं प्रत्येक कण–कण तथा प्राणीमात्र में आपका ही दर्शन करूँ।''

आवश्यक सूचना – **इन तीनों प्रार्थनाओं को तीन महीने लगातार करना बहुत अनिवार्य है। तीन महीने के बाद अपने आप अभ्यास हो जाने पर प्रार्थना करना स्वभाव बन जायेगा। जो इन तीनों प्रार्थनाओं के पत्रों को छपवाकर या इसकी फोटोकापी करवा कर वितरण करेगा उस पर भगवान् की कृपा स्वतः ही बरस जायेगी। कोई भी आज़मा कर देख सकता है।**

●

तुलसी माँ की प्रसन्नता से ही भगवद्-प्राप्ति

(श्री अनिरुद्ध दास अधिकारी)

जब तक वृन्दा महारानी की कृपा नहीं होगी तब तक गुरु, वैष्णव तथा भगवान् भी कुछ नहीं कर सकते क्योंकि भगवान् तो तुलसी माँ के पराधीन हैं। तुलसी महारानी के परामर्श के बिना भगवान् कुछ नहीं कर सकते। इसका प्रसंग लेख, धर्मग्रंथों में लिखा मिलता है जो विस्तृत होने से सूक्ष्म में लिखा जा रहा है।

जहाँ श्रीगुरु प्रदत्त माला का निरादर होता है, वहाँ पर साधक का हरिनाम में मन नहीं लगता। जपने की माला में सुमेरु, जो माला के मध्य में होता है, साक्षात् भगवान् है। सुमेरु के दोनों ओर, जो सूखी तुलसी की मनियां हैं, वे

गोपियां हैं जो सुमेरु भगवान् को घेरकर खड़ी रहती हैं। माला मैया का निरादर होने से माला उलझ जाती है, उंगलियों से छूट जाती है और किसी का बुरा सोचने पर माला टूट जाती है। जब माला का आदर-सत्कार होता है तो हरिनाम में रुचि होती है और मन लगता है। जाप भी भार स्वरूप नहीं होता।

माला को जापक जड़ और निर्जीव समझते हैं लेकिन माला जड़ और निर्जीव नहीं है। विचार करने की बात है कि निर्जीव वस्तु क्या माया से छुड़ा सकती है? क्या भगवान् से मिला सकती है? अर्थात् माला हमारी आदि जन्म की, अमर माँ है । वही हमको अपने पति-परमेश्वर भगवान् से मिला देगी।

जब जपने के लिये माला हाथ में लें तो पहले मस्तक पर लगावें। इसके बाद हृदय से लगावें। फिर माला मैया के चरणों का चुंबन करो तो माला मैया का आदर-सत्कार

हो जायेगा। इससे पहले, पाँच बार हरिनाम–

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

का उच्चारण करें। तब ही माला– झोली में हाथ डालें वरना माला मैया सुमेरु भगवान् को उंगलियों में नहीं पकड़ायेगी। सुमेरु को ढूँढना पड़ेगा। माला को जाप के बाद स्वच्छ जगह में रखें वरना अपराध बन जायेगा।

जो धरातल पर पेड़ के रूप में तुलसी माँ खड़ी है, उसकी सुचारु रूप की सेवा का तो मूल्य ही अकथनीय है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण श्री चैतन्य महाप्रभु हैं जो वृन्दा महारानी की अकथनीय सेवा में संलग्न रहते थे।

यह मेरे श्रीगुरुदेव का अकथनीय लेख है। इन बातों को कोई भी आज़मा कर देख सकता है। प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।

●

श्रीवृन्दा देवी (तुलसी माता)

श्री तुलसी जी की आरती

नमो नमः तुलसी महारानी
वृन्दे महारानी! नमो नमः।
नमो री – नमो री मैया
नमो नारायणी! नमो नमः।

जाको दरशे – परशे अघनाशी।
महिमा वेद–पुराण बखानि! नमो नमः।।

जाको पत्र – मंजरी कोमल।
श्रीपति चरण–कमल लपटानी! नमो नमः।।

धन्य तुलसी पूर्ण तप किये।
श्रीशालग्राम महापटरानी! नमो नमः।।

धूप, दीप, नैवेद्य आरती।
फूलन किये बरखा बरखानी! नमो नमः।।

छप्पन भोग छत्तीस व्यंजन।
बिना तुलसी प्रभु एक नाही मानी! नमो नमः।।

शिव, शुक, नारद और ब्रह्मादिक।
ढूँढत फिरत महामुनि ज्ञानी! नमो नमः।।

चन्द्रसखी मैया तेरो यश गावे।
भक्ति–दान दीजिये महारानी! नमो नमः।।

तुलसी महारानी वृन्दे महारानी!
नमो नमः।।

●

लेखक-परिचय

(श्री हरिपद दास अधिकारी)

नमो नामनिष्ठाय श्रीहरिनाम प्रचारिणे।
श्रीगुरु-वैष्णव प्रिय-मूर्ति, अनिरुद्धदासाय ते नमः।।

श्रीमद् अनिरुद्धदास अधिकारी (प्रभुजी) नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद परमहंस परिवाज्रकाचार्य 108 श्री श्रील भक्तिदयित माधव गोस्वामी जी महाराज के अतिप्रिय शिष्य हैं और गत 62 वर्षों से श्रीहरिनाम कर रहे हैं। अपने श्रील गुरुदेव की कृपा से इन 62 वर्षों में, वे 500 करोड़ से भी ज्यादा हरिनाम, श्रील गुरुदेव द्वारा दी गई माला पर कर चुके हैं। उनके दोनों हाथों में भगवान् के आयुधों के छः चिन्ह हैं जिसे कोई भी देख सकता है। गत 10 वर्षों से वह नित्यप्रति तीन लाख

हरिनाम करने के साथ–साथ 600 से भी अधिक पत्र केवल एक ही विषय पर लिख चुके हैं।

एक सद्गृहस्थ के रूप में, अपने परिवार में रहकर, अपनी जिम्मेवारियों को निभाते हुए, इस दिव्य अवस्था को प्राप्त करना, कोई मामूली बात नहीं है। एक सरल, निर्मल और प्रेम से भरपूर हृदय वाले ऐसे परमवैष्णव, परमभागवत को हमारा कोटि–कोटि प्रणाम।

मैं गत छः साल से उनकी कृपा प्राप्त कर रहा हूँ। उनके लगभग सभी पत्र मुझे प्राप्त हो चुके हैं। उनके पत्रों पर आधारित 'इसी जन्म में भगवद्प्राप्ति' के पाँच भाग हिन्दी भाषा में छप चुके हैं। लगभग अठारह हजार पुस्तकों का वितरण गत पाँच वर्षों में हो चुका है जिन्हें पढ़कर हजारों लोग हरिनाम करने में लगे हैं। जो पहले से कर रहे थे, वे एक लाख या इससे भी अधिक हरिनाम कर रहे हैं।

'इसी जन्म में भगवद्प्राप्ति' के पहले चार भाग धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्रदान करेंगे और पाँचवाँ भाग (अंतिम भाग) पंचमपुरुषार्थ (श्रीकृष्ण–प्रेम) प्रदान करेगा। इन सभी भागों में उन्होंने अपने श्रील गुरुदेव द्वारा लिखवाए गये प्रवचनों को लिख दिया है जिन्हें पढ़कर सभी भक्तजन अपने जीवन को सार्थक कर सकते हैं और इन पुस्तकों में लिखी बातों पर अमल करके 'इसी जन्म में भगवद्प्राप्ति' कर सकते हैं।

श्रीअनिरुद्ध प्रभु जी, जब हरिनाम संकीर्तन प्रारम्भ करते हैं तो सबसे पहले नित्य वन्दना करते हैं। फिर मंगलाचरण करते हैं। मंगलाचरण करते–करते ही उनकी दशा दिव्य हो जाती है और वे भावराज्य में प्रवेश करते हैं। उनका विरह–संवाद, उनकी प्रार्थना, उनकी दीनता, उनकी खिन्नता, उनका रोना, मचलना, शिकायत करना, उनकी लगन, उनकी भगवद्–दर्शन की लालसा और

मानव जीवन की नश्वरता को लेकर चेतावनी, भगवान् श्रीनृसिंहदेव से रक्षा के लिए विनती–इन सब भावों का दर्शन हम उनके द्वारा लिखी एक लघु पुस्तिका 'एक शिशु की विरह वेदना' में कर सकते हैं।

अपनी साधना के प्रारम्भिक वर्षों में जब 'कृष्ण–मन्त्र' का पुरश्चरण करने के बाद, उन्हें रासलीला के दर्शन हुए, भगवान् ने उन्हें रबड़ी खिलाई। भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं उन्हें हरे रंग की साड़ी पहनाई और 'ॐ अलि' का नाम दिया तो उन लीलाओं के दर्शन कर उन्होंने 'ॐ अलि' के नाम से सैंकड़ों पद लिखे।

बाद में श्रील गुरुदेव ने उन्हें शिशुभाव प्रदान कर, सैंकड़ों पत्र लिखवाये और सबको हरिनाम में लगाने का आदेश किया।

श्रीअनिरुद्ध प्रभु जी गत दस वर्षों से सभी को श्रीहरिनाम करने की शिक्षा देकर अपने श्रील गुरुदेव

की आज्ञा का पालन कर रहे हैं और हम जैसे पामर–पतितजनों का उद्धार कर रहे हैं। उनके इस महान् कार्य के लिए हम उनके सदैव ऋणी रहेंगे।

आइये हम सब एक परमवैष्णव, परमभागवत, श्रीहरिनामनिष्ठ के पादपद्मों में अनन्तकोटि बार दण्डवत् प्रणाम करते हुए, उनसे कृपा प्रार्थना करें ताकि हम सबके हृदयों में भक्तिरस की धारा बह निकले।

और अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें–

हरिपद दास अधिकारी

फोन : 099141–08292

email-haripaddasadhikari@gmail.com

डा. भागवत कृष्ण नांगिया

फोन : 098370–31415

email-harinampress@gmail.com

श्री हरिनामनिष्ठ, परमभागवत

श्री अनिरुद्ध दास अधिकारी जी

द्वारा लिखे गये ग्रन्थ

1. इसी जन्म में भगवद्–प्राप्ति (भाग–1)
2. इसी जन्म में भगवद्–प्राप्ति (भाग–2)
3. इसी जन्म में भगवद्–प्राप्ति (भाग–3)
4. इसी जन्म में भगवद्–प्राप्ति (भाग–4)
5. इसी जन्म में भगवद्–प्राप्ति (भाग–5)
6. एक शिशु की विरह वेदना
7. कार्तिक माहात्म्य एवं श्री दामोदर भजन

प्राप्ति स्थान

श्री हरिनाम प्रेस

हरिनाम पथ, लोई बाज़ार, वृन्दावन–281121 (मथुरा)

फोन : 0565–2442415, 07500987654